ज़िन्दगी से प्यार

दो रोमांचक कहानियाँ

जैक लण्डन

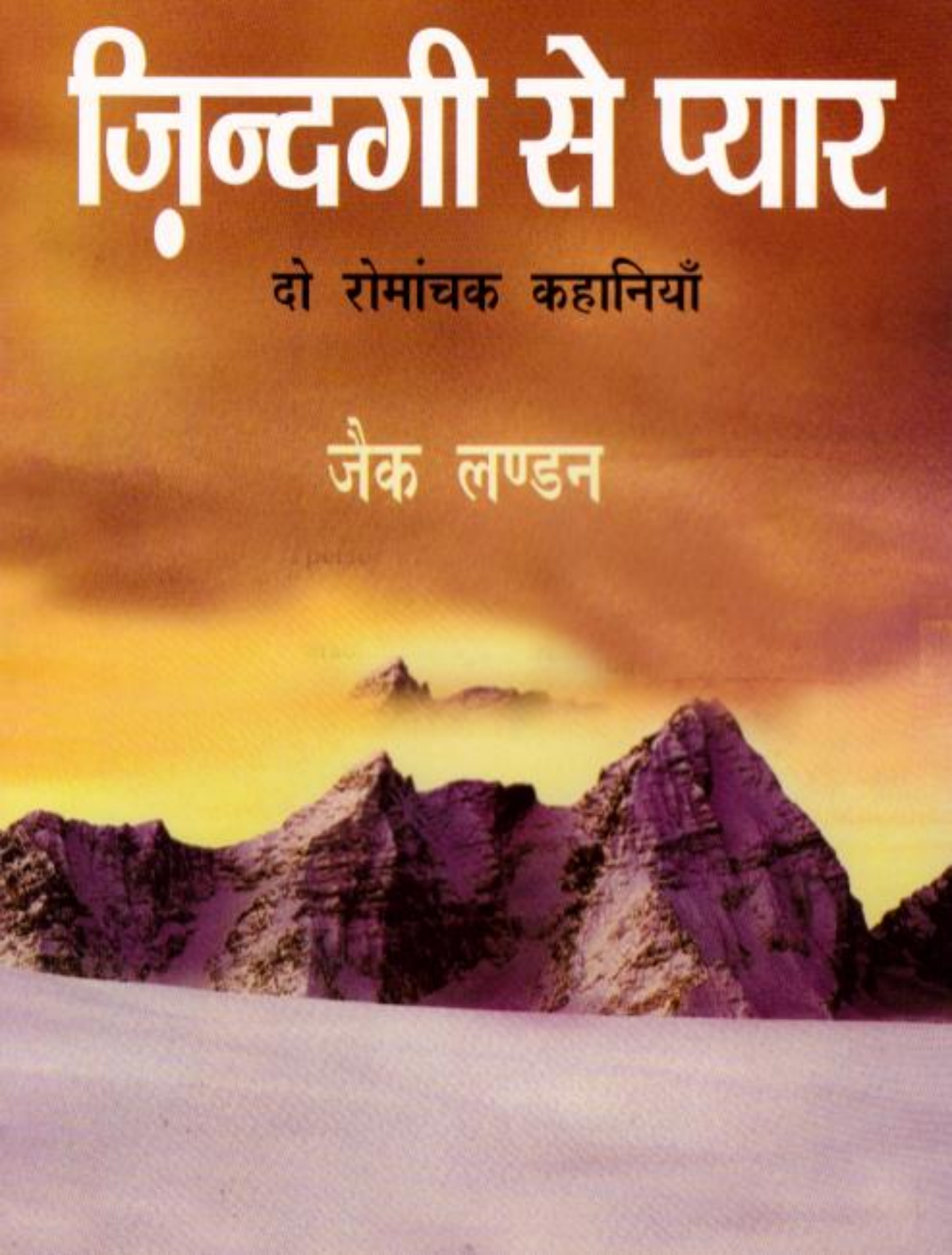

ज़िन्दगी से प्यार

दो रोमांचक कहानियाँ

जैक लण्डन

अनुवाद : सत्यम

आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 40 रुपये
पहला संस्करण 2007
पुनर्मुद्रण : अगस्त 2012

प्रकाशक
अनुराग ट्रस्ट
डी - 68, निरालानगर
लखनऊ - 226020

लेजर टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन
मुद्रक : क्रिएटिव प्रिन्टर्स 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

ज़िन्दगी से प्यार

"सब कुछ में से बस यह बना रह जायेगा —
उन्होंने ज़िन्दगी जी है और अपना पासा फेंका है,
खेल में बहुत कुछ जीता जायेगा
पर दाँव पर लगा सोना तो हारा जा चुका है।"

वे दर्द से लँगड़ाते हुए कगार से उतरे, और आगे चल रहा आदमी ऊबड़-खाबड़ पत्थरों
बीच एक बार लड़खड़ा गया। वे थके और

अनुक्रम
ज़िन्दगी से प्यार 5
आग 33

थे, और उनके चेहरे पर धीरज
जो लम्बे समय तक कठिनाई का सामना करने से आ जाता है। उ
पर भारी पिट्ठू और लपेटे हुए कम्बल लदे थे। उनके माथे से गुज़रता पट्टा
चौड़ा पट्टा उसे सहारा दे रहा था। दोनों के पास एक-एक राइफ़ल थी। वे झुके
चल रहे थे; कन्धे आगे को निकले और सिर और भी आगे बढ़ा हुआ, आँखें ज़मीन
गड़ी हुईं।

"काश हमारे पास उनमें बस दो ही कारतूस होते जो हमारे उस भण्डार में पड़े
हैं," दूसरे आदमी ने कहा।

उसकी आवाज़ एकदम भावहीन और नीरस थी। उसकी बात में कोई उत्साह
था; और चट्टानों के ऊपर से बहती फेनिल दूधिया धारा में लँगड़ाते हुए चलते
आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया।

ज़िन्दगी से प्यार

"सब कुछ में से बस यह बचा रह जायेगा –
उन्होंने ज़िन्दगी जी है और अपना पासा फेंका है
खेल में बहुत कुछ जीता जायेगा
पर दाँव पर लगा सोना तो हारा जा चुका है।"

वे दर्द से लँगड़ाते हुए कगार से उतरे, और आगे चल रहा आदमी रुखड़े पत्थरों के बीच एक बार लड़खड़ा गया। वे थके और कमज़ोर थे, और उनके चेहरों पर धीरज का वह भाव था जो लम्बे समय तक कठिनाई का सामना करने से आ जाता है। उनके कन्धों पर भारी पिट्ठू और लपेटे हुए कम्बल लदे थे। उनके माथे से गुज़रता पिट्ठू का चौड़ा पट्टा उसे सहारा दे रहा था। दोनों के पास एक-एक राइफ़ल थी। वे झुके हुए चल रहे थे; कन्धे आगे को निकले और सिर और भी आगे बढ़ा हुआ, आँखें ज़मीन पर गड़ी हुईं।

"काश हमारे पास उनमें बस दो ही कारतूस होते जो हमारे उस भण्डार में पड़े हुए हैं," दूसरे आदमी ने कहा।

उसकी आवाज़ एकदम भावहीन और नीरस थी। उसकी बात में कोई उत्साह नहीं था; और चट्टानों के ऊपर से बहती फ़ेनिल दूधिया धारा में लँगड़ाते हुए चलते पहले आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया।

दूसरा आदमी उसके पीछे-पीछे चलता रहा। उन्होंने अपने जूते उतारे नहीं थे, हालाँकि पानी बर्फ़-सा ठण्डा था – इतना ठण्डा कि उनके टखने दुखने लगे और उनके

पाँव सुन्न हो गये। कहीं-कहीं पानी उनके घुटनों से टकराता था और दोनों को डगमगाते हुए अपने पैर ठीक से टिकाने पड़ते थे।

पीछे चल रहा आदमी एक चिकने पत्थर पर फिसलकर क़रीब-क़रीब गिर पड़ा; उसने पूरा ज़ोर लगाकर खुद को सँभाला, लेकिन उसके मुँह से दर्द की तेज़ चीख़ निकल पड़ी। उसे चक्कर-सा आ गया और घूमते हुए उसने अपना ख़ाली हाथ आगे बढ़ाया, मानो हवा को थामना चाह रहा हो। सँभलने के बाद उसने आगे क़दम बढ़ाया, लेकिन एक बार फिर लड़खड़ाकर लगभग गिर पड़ा। फिर वह स्थिर खड़ा होकर आगे वाले को देखने लगा, जिसने एक बार भी सिर नहीं घुमाया था।

आदमी पूरे एक मिनट तक चुपचाप खड़ा रहा, जैसे दुविधा में हो। फिर उसने पुकारा।

"सुनो, बिल, मेरे टखने में मोच आ गयी है।"

बिल दूधिया पानी से होकर डगमगाता हुआ बढ़ता गया। उसने मुड़कर देखा नहीं। पहला आदमी उसे जाते हुए देखता रहा, और हालाँकि उसका चेहरा अब भी पहले की तरह भावहीन था, पर उसकी आँखें घायल हिरन-सी हो गयी थीं।

दूसरा आदमी लँगड़ाते हुए उस पार के तट पर चढ़ा और पीछे देखे बिना सीधे चलता गया। धारा के बीच खड़ा आदमी उसे देख रहा था। उसके होंठ हल्के-से काँपे, जिससे उन्हें ढँके हुए भूरे बालों के गुच्छे में हलचल साफ़ दिखायी दी। उसने मूँछों पर ज़ुबान फिरायी।

"बिल!" उसने फिर आवाज़ लगायी। यह एक मुसीबतज़दा इनसान की मदद की गुहार थी, लेकिन बिल की गर्दन नहीं घूमी। आदमी उसे जाता देखता रहा। वह भयानक ढंग से लँगड़ाते और आगे की ओर झुके हुए नीची पहाड़ी के हल्के उभार पर चला जा रहा था। वह उसे जाते हुए देखता रहा जब तक कि वह उभार के दूसरी ओर पहुँचकर आँख से ओझल नहीं हो गया। फिर उसने नज़र घुमायी और धीरे-धीरे अपने चारों ओर

की उस दुनिया को देखा जिसमें बिल उसे अकेला छोड़ गया था।

क्षितिज के पास सूरज का सुलगता गोला कुहासे और भाप के बीच से धुँधला-सा दिख रहा था। आदमी ने एक टाँग पर वज़न देकर खड़े होते हुए जेब से घड़ी निकाली। चार बज रहे थे, और चूँकि जुलाई का आख़िरी या अगस्त का पहला दिन था – उसे तारीख़ ठीक-ठीक नहीं मालूम थी – इससे उसने अनुमान लगाया कि सूरज लगभग उत्तर-पश्चिम में था। उसने दक्षिण की ओर देखा। उसे मालूम था कि उन धुँधली पहाड़ियों के पार कहीं ग्रेट बियर लेक है। उसे यह भी पता था कि उस दिशा में कनाडियन बैरन के उजाड़ विस्तार को बीच से काटता हुआ आर्कटिक घेरा गुज़रता है। जिस धारा में वह खड़ा था, वह कॉपरमाइन नदी में जाकर मिलती थी जो उत्तर की ओर बहकर कोरोनेशन खाड़ी और आर्कटिक सागर में गिरती थी। वह कभी वहाँ गया नहीं था, पर उसने एक बार हडसन बे कम्पनी के चार्ट पर इसे देखा था।

एक बार फिर उसने अपने इर्द-गिर्द नज़र दौड़ायी। यह कोई उत्साहजनक दृश्य नहीं था। हर ओर क्षितिज धुँधला-सा था। सारी पहाड़ियाँ नीची थीं। कहीं कोई पेड़ नहीं था, न कोई झाड़ी, न घास – कुछ नहीं, बस एक ज़बरदस्त और भयंकर वीरानी जो उसकी आँखों में डर भरती जा रही थी।

"बिल!" वह फुसफुसाया, पहले एक बार, फिर दोबारा, "बिल!"

वह दूधिया पानी के बीच खड़ा ऐसे दुबक रहा था जैसे दृश्य की विराटता उसे बेपनाह ताक़त से दबा रही हो, अपनी भीषणता से उसे बुरी तरह कुचले डाल रही हो। वह जूड़ी के दौरे की तरह काँपने लगा और छपाक की आवाज़ के साथ बन्दूक़ उसके हाथ से गिर पड़ी। इससे वह चौंक गया। उसने अपने दिल से डर दूर किया और खुद को सँभालकर पानी में टटोलते हुए हथियार बाहर निकाल लिया। उसने अपना पिट्ठू बायें कन्धे पर और ऊपर चढ़ा लिया ताकि चोटिल टखने पर उसका वज़न कुछ कम हो सके। फिर वह धीरे-धीरे और सावधानी के साथ तट की ओर चल दिया। हर क़दम पर

दर्द की लहर उसके पैर से होते हुए बदन में दौड़ जाती थी।

वह रुका नहीं। पागलपन की हद तक पहुँची बदहवासी के साथ दर्द पर ध्यान दिये बिना, वह हड़बड़ाते हुए उस पहाड़ी के ऊपर चढ़ गया जिसके दूसरी ओर उसका साथी गुम हो गया था। वह लँगड़ाते और भचकते अपने साथी से भी ज़्यादा भद्दा और विद्रूप लग रहा था। ऊपर पहुँचकर उसने एक छिछली, वीरान घाटी देखी। उसने एक बार फिर अपने डर पर क़ाबू पाया, पिट्ठू को बायें कन्धे पर और ऊपर चढ़ाया और एक ओर को झुके हुए ढलान से नीचे उतरने लगा।

घाटी की तलहटी एकदम गीली थी। घनी, मोटी काई पानी को स्पंज की तरह सतह के क़रीब रखती थी। हर क़दम पर उसके पैरों के नीचे से पानी छलछलाकर निकलता था और हर बार जब वह पैर उठाता था तो काई से 'सक्क' की आवाज़ होती थी। वह काई के समुद्र में छोटे-छोटे टापुओं की तरह उभरी चट्टानों पर पैर रखते हुए पहले आदमी के पदचिह्नों पर चल रहा था।

वह अकेला था, पर खोया नहीं था। उसे मालूम था कि और आगे, वह एक ऐसी जगह पहुँचेगा जहाँ छोटे-छोटे सूखे फ़र वृक्षों से घिरी एक छोटी-सी झील *तित्चिन निचिली* थी, उस इलाक़े की जुबान में जिसका अर्थ था "नन्ही छड़ियों की भूमि।" और उस झील में एक छोटी धारा बहकर आती थी, जिसका पानी दूधिया नहीं था। उस धारा के किनारे ऊँची घास थी – यह उसे अच्छी तरह याद था – लेकिन पेड़ नहीं थे। वह इस धारा के साथ-साथ वहाँ तक जायेगा जहाँ यह खड़ी चट्टान तक पहुँचकर ख़त्म हो जाती है। वह इस चट्टान को पार करेगा और पश्चिम की ओर बहने वाली दूसरी धारा के साथ-साथ वहाँ तक जायेगा जहाँ यह डीज नदी में गिरती है। और वहाँ उसे कई चट्टानों से ढँकी एक उल्टी डोंगी के नीचे छिपा अपना गुप्त भण्डार मिलेगा। इस भण्डार में हैं उसकी ख़ाली बन्दूक़ के लिए गोलियाँ, मछली पकड़ने के काँटे और डोरी और छोटा-सा जाल – खाना जुटाने के लिए पर्याप्त साज़ो-सामान। साथ ही, उसे

थोड़ा-सा आटा, नमक लगे सुअर के मांस का एक टुकड़ा और कुछ बींस भी मिल जायेंगी।

बिल वहाँ उसका इन्तज़ार कर रहा होगा, और वे दोनों डोंगी में साथ-साथ डीज की धारा के साथ दक्षिण की ओर ग्रेट बियर लेक तक निकल जायेंगे। और फिर वे विशाल झील के पार, और दक्षिण की ओर चलते जायेंगे, जब तक कि वे मैकेंजी नहीं पहुँच जाते। जाड़ा उनका पीछा करेगा पर वे दक्षिण, और दक्षिण चलते जायेंगे। नदियाँ-धाराएँ सब जम जायेंगी और दिन ठण्डे और शुष्क होते जायेंगे, पर वे आर्कटिक के जाड़े की पकड़ से दूर, हडसन बे कम्पनी की किसी गरम चौकी पर पहुँच जायेंगे, जहाँ पेड़ ऊँचे और घने होंगे और खाने को भरपूर होगा।

आगे बढ़ते हुए वह आदमी यही सब सोच रहा था। लेकिन वह अपने शरीर से जितना ज़ोर लगा रहा था, उतना ही ज़ोर उसका दिमाग़ भी लगा रहा था, यह सोचने में कि बिल उससे दग़ा नहीं कर गया था, कि बिल उस भण्डार के पास उसका इन्तज़ार ज़रूर करेगा। उसे ऐसा सोचना ही था, वरना कोशिश करने का कोई मतलब नहीं रह जाता, और वह वहीं पड़े-पड़े मर जाता। और जब सूरज का धुँधला गोला उत्तर-पश्चिम में धीरे-धीरे डूब रहा था, तब तक वह आने वाले जाड़े के पहले अपने और बिल के दक्षिण की ओर पलायन का पूरा रास्ता, एक-एक इंच, कई बार मन में तय कर चुका था। और वह अपने गुप्त भण्डार का खाना तथा हडसन बे कम्पनी की चौकी का खाना कई-कई बार हड़प कर चुका था। पिछले दो दिन से उसने कुछ नहीं खाया था। उसके पहले भी काफ़ी समय से उसे जीभर के खाने को नहीं मिला था। बीच-बीच में वह रुककर बेरंग मस्केग बेरियाँ उठाकर मुँह में रखता और उन्हें चबाकर निगल लेता था। मस्केग बेरी के पनीले गूदे के भीतर एक छोटा-सा बीज होता है। मुँह में रखते ही गूदा पानी हो जाता है और बीज चबाने पर तीखा लगता है। वह आदमी जानता था कि बेरियों में ज़रा भी पोषण नहीं है, लेकिन वह उस उम्मीद के साथ उन्हें चबाये जा रहा था जो

ज्ञान से बड़ी होती है और अनुभव को झुठलाती है।

नौ बजे उसे एक बाहर निकली हुई चट्टान से ठोकर लगी, और थकान और कमज़ोरी से लड़खड़ाकर वह गिर पड़ा। कुछ देर तक वह बिना हिले-डुले बायीं करवट पड़ा रहा। फिर वह पिट्ठू के पट्टों से सरककर निकल आया और किसी तरह घिसटकर बैठने की मुद्रा में आ गया। अभी अँधेरा नहीं हुआ था, और ढलती रात के झुटपुटे में वह चट्टानों के बीच सूखी काई टटोलने लगा। जब एक ढेरभर जुट गया तो उसने आग जलायी – सुलगती, धुआँ देती आग – और टीन के एक बर्तन में पानी उबलने को रख दिया।

उसने अपना पिट्ठू खोला और सबसे पहले माचिस की तीलियाँ गिनीं। कुल सड़सठ थीं। उसने पक्का करने के लिए उन्हें तीन बार गिना। फिर उसने उनके कई हिस्से किये और उन्हें मोमिया काग़ज़ में लपेट दिया। एक पुड़िया उसने तम्बाकू की ख़ाली थैली में रखी, एक अपने मुड़े-तुड़े टोप के अन्दर वाले फीते में फँसायी और तीसरी को क़मीज़ के अन्दर डाल लिया। यह कर चुकने के बाद वह एकदम से घबरा उठा और उसने सबको खोलकर फिर से गिना। वे अब भी सड़सठ थीं।

उसने आग के पास बैठकर अपने भीगे जूते और जुराबें सुखायीं। हिरन की खाल के जूते भीगकर फूले और तार-तार हो रहे थे। मोटी ऊनी जुराबें जगह-जगह घिस गयी थीं और उसके ज़ख़्मी पैरों से ख़ून बह रहा था। उसका टखना दर्द से थरथरा रहा था। उसने ग़ौर से उसका मुआइना किया। वह सूजकर उसके घुटने के बराबर हो गया था। उसने अपने दो कम्बलों में से एक से एक लम्बी पट्टी फाड़ी और टखने को कसकर बाँध दिया। उसने कुछ और पट्टियाँ फाड़ीं और उन्हें अपने पैरों पर लपेट लिया ताकि वे जूते-मोजे दोनों का काम करें। फिर उसने भाप छोड़ता उबला पानी पिया, घड़ी में चाभी दी और कम्बल में घुस गया।

वह मुर्दे की तरह सोया। आधी रात के क़रीब कुछ देर के लिए अँधेरा छाया और

छँट गया। उत्तर-पूर्व में सूरज उगा – या यूँ कहें कि उस तरफ़ से पौ फटी क्योंकि सूरज तो भूरे बादलों से ढँका हुआ था।

छह बजे वह जागा, पर चुपचाप पीठ के बल लेटा रहा। भूरे आसमान को निहारते हुए उसे भूख महसूस हुई। कोहनी के बल करवट बदलते ही ज़ोर से घुरघुराने की आवाज़ से वह चौंका और देखा कि एक नर रेण्डियर चौंकन्ने कुतूहल से उसे देख रहा है। जानवर उससे पचास फ़ीट से ज़्यादा दूरी पर नहीं था और आदमी के मन में फ़ौरन ही आग पर भुनते रेण्डियर के मांस का दृश्य और स्वाद कौंध गया। यन्त्रवत उसने ख़ाली बन्दूक़ उठायी, घोड़ा चढ़ाया और ट्रिगर दबा दिया। हिरन ने फुफकार मारी और पत्थरों पर खुरों की तेज़ आवाज़ के साथ उछलकर भागा।

आदमी ने गाली देकर ख़ाली बन्दूक़ दूर फेंक दी। खड़े होने की कोशिश करते हुए उसने ज़ोर से कराह भरी। यह धीमा और मुश्किल काम था। उसके जोड़ जंग खाये क़ब्ज़ों की तरह हो गये थे। हर हरकत पर उसका जोड़-जोड़ कड़कड़ कर उठता था और पूरा ज़ोर लगाकर ही वह हाथ-पैर मोड़ या खोल पा रहा था। आख़िरकार, जब वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया, उसके बाद भी इनसान की तरह सीधा खड़ा होने में उसे एक मिनट और लग गया।

वह एक छोटे-से टीले पर चढ़ गया और चारों ओर देखा। कहीं न कोई पेड़ था, न झाड़ी, बस काई का धूसर समुद्र था जिसके बीच-बीच में कहीं-कहीं धूसर चट्टानें, धूसर जलकुण्ड और धूसर जलधाराएँ कुछ विविधता पैदा कर रही थीं। आसमान भी धूसर था। सूरज या धूप का नामो-निशान नहीं था। उसे उत्तर दिशा का कोई बोध नहीं था और वह भूल चुका था कि पिछली रात किस रास्ते से यहाँ पहुँचा था। लेकिन वह भटका नहीं था। उसे यह यक़ीन था। जल्दी ही वह नन्ही छड़ियों की भूमि तक पहुँच जायेगा। उसे लगा कि वह बायीं ओर कहीं थी, ज़्यादा दूर नहीं – शायद उस नीची पहाड़ी के पार ही।

वह लौटकर अपना पिट्ठू यात्रा के लिए तैयार करने लगा। उसने माचिस की तीनों पुड़ियों को टटोलकर देखा, हालाँकि उसने फिर से उन्हें गिना नहीं। लेकिन वह बारहसिंगे के चमड़े की एक मोटी-सी थैली को लेकर कुछ देर असमंजस में रहा। वह ज़्यादा बड़ी नहीं थी। वह अपनी दोनों हथेलियों से उसे ढँक सकता था। लेकिन उसका वज़न पन्द्रह पौण्ड था – बाक़ी के सारे बोझ के बराबर – और इस बात से उसे चिन्ता हो रही थी। आख़िर उसने थैली एक किनारे रख दी और कम्बलों को लपेटने लगा। वह रुका और बारहसिंगे के चमड़े की मोटी-सी थैली पर नज़र डाली। फिर उसने अपने इर्द-गिर्द एक उद्धत निगाह के साथ उसे उठा लिया, मानो यह वीराना इसे उससे छीनने की कोशिश कर रहा हो; और जब वह डगमगाते क़दमों से सफ़र जारी रखने के लिए उठा, तो यह उसके पिट्ठू में शामिल थी।

वह बायीं ओर चलता रहा, बस बीच-बीच में रुककर मस्केग बेरियाँ खाते हुए। उसका टखना अकड़ गया था और वह पहले से ज़्यादा लँगड़ा रहा था, लेकिन उसका दर्द पेट के दर्द के आगे कुछ नहीं था। भूख से आँतें कुलबुला रही थीं। उनकी कुलबुलाहट इतनी बढ़ गयी कि उसके लिए नन्ही छड़ियों की भूमि तक पहुँचने के रास्ते पर ध्यान टिकाये रहना मुश्किल हो गया। मस्केग बेरियों से आँतों की जलन कम नहीं हो रही थी पर उनके कड़वे रस से उसकी ज़ुबान और तालू में छाले पड़ गये थे।

वह एक घाटी में पहुँचा जहाँ भटतीतरों का एक झुण्ड पंख फड़फड़ाते हुए चट्टानों और मस्केग के पौधों से अचानक उड़ा। वे केर्-केर्-केर् की आवाज़ निकाल रहे थे। उसने उन पर पत्थर फेंके लेकिन कोई निशाना सही नहीं बैठा। उसने अपना पिट्ठू ज़मीन पर रख दिया और गौरैया के पीछे लगी बिल्ली की तरह उनके पीछे लग लिया। नुकीले पत्थरों से उसकी पतलून कट गयी और उसके घुटनों से ख़ून बहने लगा; लेकिन इसकी पीड़ा को भूख की पीड़ा ने दबा दिया। गीली काई पर रेंगते हुए उसके कपड़े तर-बतर हो गये और बदन ठण्डा होने लगा; पर भूख का ज्वर इतना तेज़ था कि उसे

इसका भान भी नहीं था। हर बार भटतीतर उसके सामने से पंख फड़फड़ाते हुए उड़ जाते थे। उनकी केर्-केर्-केर् से उसे चिढ़ होने लगी और वह गालियाँ बकते हुए उन्हीं की आवाज़ में उन पर चिल्लाने लगा।

एक बार वह रेंगकर एक के पास तक पहुँच गया जो शायद सोया हुआ था। आदमी ने भी उसे तब तक नहीं देखा था जब तक वह चट्टान के गड्ढे से उछलकर एकदम उसके चेहरे के सामने नहीं आ गया। उसने हड़बड़ाकर पकड़ने की कोशिश की पर उसके हाथ में पूँछ के तीन पंख ही आये। उसे उड़ता देख वह नफ़रत से भर उठा, मानो चिड़िया ने उसके ख़िलाफ़ कोई जुर्म कर दिया हो। फिर वह लौट आया और पिट्ठू कन्धे पर लाद लिया।

जैसे-जैसे दिन बीतता गया वह ऐसी घाटियों से होकर गुज़रा जहाँ पशु-पक्षी और भी ज़्यादा थे। रेण्डियर का एक झुण्ड कुछ दूरी से गुज़रा। उसमें बीसेक जानवर थे और एकदम राइफ़ल की रेंज में थे। उसने अपने भीतर उनके पीछे दौड़ पड़ने की एक उन्मत्त इच्छा महसूस की। उसे एकदम पक्का लग रहा था कि वह दौड़कर उन्हें पकड़ सकता है। फिर एक काली लोमड़ी उसे अपनी ओर आती दिखायी दी जिसके मुँह में एक भटतीतर था। आदमी चिल्लाया। यह एक डरावनी चीख़ थी लेकिन डरकर भागी लोमड़ी ने भटतीतर को छोड़ा नहीं। दोपहर बाद वह एक धारा के साथ-साथ चलने लगा जो यहाँ-वहाँ उगी नरकट के झुरमुटों से होकर बह रही थी। चूने की वजह से इसका पानी दूधिया था। नरकट को जड़ों के पास मज़बूती से पकड़कर उसने खींचा और एक छोटे प्याज जैसी गाँठ निकाली। वह नर्म थी और उसमें दाँत धँसाते ही हुई कच्च की आवाज़ स्वादिष्ट भोजन का वादा कर रही थी। लेकिन इसके रेशे सख़्त थे। उसमें बेरियों की तरह बस पानी से भरे ताँत जैसे रेशे थे जिनमें कोई पोषक तत्व नहीं था। उसने अपना पिट्ठू पटक दिया और घुटनों के बल नरकट के झुरमुट में घुसकर चरने वाले जानवर की तरह गाँठें निकाल-निकालकर चबाने लगा।

वह बहुत थका हुआ था और आराम करने की इच्छा अक्सर उसके मन में आती थी; वह कहीं भी लेटकर सो जाना चाहता था, लेकिन वह लगातार चलता जा रहा था। अब उसे नन्ही छड़ियों की भूमि तक पहुँचने की इच्छा नहीं बल्कि पेट में जलती आग हाँक रही थी। वह छोटे जलकुण्डों में मेढ़क ढूँढ़ता था और केंचुओं की तलाश में नाख़ूनों से मिट्टी खोद डालता था, हालाँकि वह जानता था कि इस सुदूर उत्तर में न तो मेढ़क होते हैं और न ही केंचुए।

वह हर जलकुण्ड में झुक-झुककर झाँकता था और आख़िरकार जब लम्बी शाम ढलनी शुरू हो गयी तो उसे ऐसे ही एक कुण्ड में एक अकेली छोटी-सी मछली दिखायी दी। वह पकड़ने के लिए लपका और कन्धे तक उसका हाथ पानी में डूब गया, पर मछली पकड़ में नहीं आयी। उसने दोनों हाथों से पकड़ने की कोशिश की जिससे तली की दूधिया मिट्टी हिल गयी। उत्तेजना में वह पानी में गिर पड़ा और कमर तक भीग गया। अब पानी इतना गँदला हो गया था कि वह मछली को देख नहीं सकता था और उसे पानी थिरा जाने और मिट्टी नीचे बैठ जाने तक इन्तज़ार करना पड़ा।

कोशिश फिर शुरू हुई और एक बार फिर पानी गँदला हो गया। लेकिन वह इन्तज़ार नहीं कर सकता था। उसने टीन की बाल्टी निकाली और कुण्ड को ख़ाली करने लगा। शुरू में वह पागलों की तरह पानी फेंकने लगा जिससे वह खुद भी भीग रहा था और पानी इतना नज़दीक गिर रहा था कि बहकर वापस चला जाता था। फिर वह ज़्यादा सावधानी से काम करने लगा। वह शान्त रहने की पूरी कोशिश कर रहा था हालाँकि उसका दिल ज़ोरों से धड़क रहा था और उसके हाथ काँप रहे थे। आधे घण्टे बाद कुण्ड क़रीब-क़रीब सूख चुका था। उसमें एक कप भी पानी नहीं था। लेकिन मछली का अता-पता नहीं था। उसे पत्थरों के बीच एक दरार दिखायी दी जिससे होकर वह बग़ल के एक बड़े कुण्ड में भाग गयी थी जिसे वह सारा दिन और सारी रात काम करके भी ख़ाली नहीं कर सकता था। अगर उसे दरार का पता होता तो वह शुरू में ही

एक पत्थर से उसे बन्द कर सकता था और तब मछली उसकी हो चुकी होती।

यह सोचते हुए वह भहराकर भीगी ज़मीन पर धम्म से बैठ गया। पहले तो वह अपने आप से धीमे-धीमे सुबकता रहा, फिर वह चारों ओर फैले निर्मम वीराने में ऊँची आवाज़ में रो पड़ा और काफ़ी देर तक उसका शरीर सिसकियों और हिचकियों से काँपता रहा।

उसने आग जलायी और गरम पानी पी-पीकर अपने भीतर गरमी पैदा क और पिछली रात की तरह एक चट्टान पर लेट गया। सोने से पहले उसने अपनी माचिस की तीलियों को टटोला और घड़ी में चाभी दी। कम्बल भीगकर लिसलिसे हो गये थे। उसका टखना दर्द से थरथरा रहा था। लेकिन उसे सिर्फ़ भूख का अहसास हो रहा था और अपनी बेचैनीभरी नींद के दौरान वह दावतों और भोजों और तरह-तरह से सजी खाने की चीज़ों के सपने देखता रहा।

वह जागा तो ठण्ड उसकी हड्डियों में समा चुकी थी और वह बीमार महसूस कर रहा था। सूरज का कहीं पता नहीं था। धरती और आसमान का धूसर रंग और गहरा, और गाढ़ा हो गया था। ठण्डी, खुश्क हवा बह रही थी और पहाड़ियों की चोटियाँ मौसम की पहली बर्फ़ से सफ़ेद दिखने लगी थीं। जितनी देर में उसने आग जलायी और पानी उबाला, उतने में ही उसके इर्द-गिर्द की हवा गाढ़ी और सफ़ेद होने लगी। यह भीगी बर्फ़ थी; बर्फ़ के फाहे बड़े और गीले थे। शुरू में वे धरती को छूते ही पिघल जाते थे, लेकिन फिर उनकी तादाद बढ़ती गयी। उन्होंने ज़मीन को ढँक लिया, आग बुझा दी और सूखी काई का उसका ईंधन बरबाद कर दिया।

उसके लिए यह संकेत था कि अपना पिट्ठू लादे और गिरते-पड़ते आगे चल पड़े। कहाँ जाना है अब यह उसे पता नहीं था। अब उसे न तो नन्ही छड़ियों की भूमि की फ़िक्र थी, न बिल की और न डीज नदी के किनारे उल्टी डोंगी के नीचे छुपे भण्डार की। उस पर बस एक विचार हावी था, "कुछ खाना है।" वह भूख से पागल हो रहा

था। उसे इस बात का ज़रा भी ध्यान नहीं था कि वह किधर जा रहा था। बस वह रास्ता घाटियों की तली से गुज़रना चाहिए था, ताकि वह भीगी बर्फ़ में टटोलकर मस्केग बेरियाँ और गाँठों वाली घास खींचकर निकाल सके। लेकिन ये सब एकदम बेस्वाद थे और उनसे तसल्ली नहीं मिलती थी। उसे एक सेवार मिली जिसका स्वाद खट्टा-सा था और वह जितनी भी ढूँढ़ पाया, सब खा गया। हालाँकि यह ज़्यादा नहीं थी क्योंकि उसकी लता कई इंच बर्फ़ के नीचे छुप गयी थी।

उस रात उसे आग और गरम पानी के बिना ही काम चलाना पड़ा, और वह भीगे कम्बलों में लिपटा भूख के सपने देखता हुआ सो गया। बर्फ़ ठण्डी बारिश में बदल गयी। वह कई बार जागा और अपने चेहरे पर इसे महसूस किया। दिन निकला – एक और धूसर, बिना सूरज वाला दिन। बारिश बन्द हो गयी थी। उसकी भूख अब पैनी नहीं रह गयी थी। जहाँ तक खाने की लालसा का सवाल था, उसकी इन्द्रियाँ मर चुकी थीं। उसे अपने पेट में एक धीमा, भारी-सा दर्द महसूस हो रहा था, लेकिन इससे ज़्यादा परेशानी नहीं हो रही थी। अब वह पहले से ज़्यादा तार्किक ढंग से सोच पा रहा था और एक बार फिर उसका ध्यान नन्ही छड़ियों की भूमि और डीज नदी के पास के गुप्त भण्डार पर था।

उसने एक कम्बल के बचे हुए हिस्से से और पट्टियाँ फाड़ीं और अपने लहूलुहान पैरों पर लपेट लीं। उसने घायल टखने को भी फिर से कसा और सफ़र के लिए तैयार हो गया। पिट्ठू के पास आकर वह देर तक बारहसिंगे के चमड़े की मोटी थैली को देखता रहा लेकिन आख़िरकार उसे साथ ले लिया।

बारिश से बर्फ़ पिघल गयी थी और सिर्फ़ पहाड़ियों की चोटियों पर सफ़ेदी दिख रही थी। सूरज निकल आया और उसे दिशाओं का पता चल गया पर वह यह भी जान गया कि वह भटक गया है। शायद, पिछले दो दिनों में वह भटकते हुए कुछ ज़्यादा ही बायीं ओर चला गया था। अब वह नाक की सीध में दायीं ओर चल पड़ा ताकि इस

विचलन की भरपायी हो सके।

हालाँकि भूख अब उस तरह कचोट नहीं रही थी पर वह बहुत कमज़ोरी महसूस कर रहा था। उसे अकसर सुस्ताने के लिए रुकना पड़ता था और रुकते ही वह मस्केग बेरियों और घास की गाँठों पर टूट पड़ता था। उसकी ज़ुबान सूखी और बढ़ी हुई महसूस हो रही थी, मानो उस पर रोएँ उग आये हों, और उसका मुँह कड़वाहट से भरा था। उसका दिल भी उसे काफ़ी परेशान कर रहा था। जैसे ही वह कुछ मिनट तक चलता था, वह ज़ोर से धकधक करने लगता और फिर इस तरह उछलकर उसके मुँह को आ जाता कि उसे घुटन-सी होने लगती और उसका सिर चकराने लगता था। दोपहर के समय उसे पानी से भरे एक गड्ढे में दो नन्ही मछलियाँ दिखायी दीं। उसे ख़ाली करना तो नामुमकिन था लेकिन अब वह पहले से ज़्यादा शान्त था और अपनी टीन की बाल्टी में उन्हें पकड़ने में कामयाब रहा। वे उसकी छोटी उँगली से बड़ी नहीं थीं लेकिन वह ज़्यादा भूखा नहीं था। उसके पेट का हल्का दर्द और भी हल्का और मन्द पड़ता जा रहा था। ऐसा लगता था मानो उसका पेट ऊँघ रहा हो। वह दोनों मछलियाँ कच्ची ही खा गया। वह बड़े ध्यान से धीरे-धीरे चबा रहा था क्योंकि इस समय खाना उसके लिए एक विशुद्ध बौद्धिक क्रिया थी। उसे खाने की कोई इच्छा नहीं थी, पर वह जानता था कि ज़िन्दा रहने के लिए उसे खाना होगा।

शाम को उसने तीन और मछलियाँ पकड़ीं, दो को खा लिया और तीसरी को नाश्ते के लिए रख लिया। धूप से काई कहीं-कहीं सूख गयी थी और उसे एक बार फिर गरम पानी मिल गया। उस दिन वह दस मील से ज़्यादा नहीं तय कर पाया; और अगले दिन वह पाँच मील ही चल सका। वह तभी तक चल पाता था जब तक उसका कलेजा मुँह को नहीं आने लगता। लेकिन उसका पेट अब उसे ज़रा भी परेशान नहीं कर रहा था। वह सो चुका था। अब वह एक नये इलाक़े में पहुँच गया था जहाँ रेण्डियर ज़्यादा थे, और साथ ही भेड़िये भी। अकसर उनकी चिल्लाहट वीराने में तैरती हुई उसके पास तक

पहुँचती थी और एक बार उसने अपने रास्ते में तीन भेड़िये देखे थे जो उसे देखते ही वहाँ से खिसक गये।

एक और रात गुज़री, और सुबह उसका दिमाग़ पहले से ज़्यादा साफ़ था। उसने बारहसिंगे के चमड़े की मोटी थैली का चमड़े का फीता खोल दिया। थैली से सोने के मोटे-मोटे कणों और ढेलों की पीली धारा ज़मीन पर बिखर गयी। उसने सोने को दो हिस्सों में बाँटा, आधे को कम्बल के एक टुकड़े में लपेटकर एक अलग-सी दिख रही चट्टान के नीचे छुपाया और बाक़ी आधे को पिट्ठू में रख लिया। बचे हुए एक कम्बल से भी पट्टियाँ फाड़कर उसने पैरों पर लपेट लीं। वह अब भी अपनी बन्दूक़ लिये हुए था, क्योंकि वहाँ डीज नदी के किनारे के भण्डार में कारतूस भी रखे थे। यह दिन कुहासेभरा था और एक बार फिर उसकी भूख जाग गयी। वह बेहद कमज़ोर था और उसका सिर इस क़दर चकरा रहा था कि कभी-कभी उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा जाता था। अब वह अकसर ही ठोकर खाकर गिर पड़ता था; और एक बार वह सीधा भटतीतर के एक घोंसले पर गिर पड़ा। उसमें चार बच्चे थे – शायद एक दिन पहले ही जन्मे हुए। वह उन्हें ज़िन्दा ही चबा गया। उनकी माँ ज़ोर से चीख़ते और पंख पटकते हुए उसके चारों ओर नाच रही थी। उसने अपनी बन्दूक़ के कुन्दे से उसे मार गिराने की कोशिश की, पर वह बच निकली। उसने उस पर पत्थर फेंके और तुक्के से एक पत्थर उसे लग गया जिससे उसका एक पंख टूट गया। फिर वह टूटा पंख घसीटते हुए वहाँ से भागी। आदमी उसके पीछे था।

चिड़िया के बच्चों से उसकी भूख और भड़क उठी थी। वह घायल टखने पर फुदकते और घिसटते हुए चिड़िया के पीछे लगा था। कभी वह गला फाड़कर चिल्लाते हुए उस पर पत्थर फेंकता था, तो कभी चुपचाप धीरज के साथ गिरते-पड़ते पीछा करता था। कई बार उसे कुछ सुझायी नहीं देता था और तब वह रुककर अपनी आँखों और माथे को मलता रहता था।

पीछा करते हुए वह घाटी के बीच में दलदली ज़मीन पर चला गया और उसे भीगी काई पर क़दमों के निशान दिखायी दिये। वे उसके नहीं थे – यह तो साफ़ था। ज़रूर वे बिल के होंगे। लेकिन वह रुक नहीं सकता था, क्योंकि भटतीतर भागी जा रही थी। पहले वह उसे पकड़ेगा, फिर लौटकर जाँच करेगा।

उसने भटतीतर को थका दिया, लेकिन वह खुद भी बेतरह थक गया। वह हाँफते हुए लुढ़की पड़ी थी, और दस क़दम पर वह भी हाँफते हुए लुढ़का पड़ा था। उसमें इतनी भी ताक़त नहीं थी कि रेंगकर चिड़िया के पास चला जाये। जब तक वह सँभला, तब तक चिड़िया भी सँभल गयी और पंख फड़फड़ाते हुए उसके भूखे हाथ की पकड़ से निकल गयी। शिकार फिर शुरू हो गया। रात घिर आयी और वह बचकर भाग निकली। आदमी कमज़ोरी से लड़खड़ा गया और पीठ पर पिट्ठू लिये-दिये मुँह के बल गिर पड़ा। उसका गाल कट गया। काफ़ी देर तक वह ऐसे ही पड़ा रहा; फिर करवट बदली, घड़ी में चाभी दी और सुबह तक वहीं लेटा रहा।

अगला दिन भी कुहासे से भरा था। उसके आख़िरी कम्बल का आधा हिस्सा पैरों की पट्टियों की भेंट चढ़ चुका था। वह बिल के क़दमों के निशान ढूँढ़ने में नाकाम रहा था। इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था। उसकी भूख उसे इस क़दर हाँक रही थी कि वह सोचने लगा कि शायद बिल भी रास्ता भटक गया था। दोपहर तक उसकी पीठ का बोझ असह्य हो उठा। एक बार फिर उसने सोने को दो हिस्सों में बाँटा, पर इस बार आधा हिस्सा यूँ ही ज़मीन पर गिरा दिया। दोपहर बाद उसने बाक़ी को भी फेंक दिया और अब उसके पास सिर्फ़ आधा कम्बल, टीन की बाल्टी और राइफ़ल रह गयी थी।

एक मतिभ्रम उसे परेशान करने लगा। उसे यक़ीन-सा होने लगा कि उसके पास एक कारतूस बचा हुआ है। उसे लगा कि वह राइफ़ल के चैम्बर में पड़ा था लेकिन उसका ध्यान इस ओर नहीं गया। दूसरी ओर, वह जानता था कि चैम्बर ख़ाली है। लेकिन मतिभ्रम बना रहा। वह घण्टों तक इसे दूर करने की कोशिश करता रहा, फिर

उसने राइफ़ल खोल दी और चैम्बर ख़ाली पाया। वह इस क़दर हताश हुआ मानो उसे वाक़ई वहाँ कारतूस होने की उम्मीद थी।

वह भारी क़दमों से आधे घण्टे तक और चलता रहा, जब वह मतिभ्रम फिर से उस पर हावी हो गया। वह फिर उसे दिमाग़ से दूर करने की कोशिश करने लगा और आख़िरकार उसने दिमाग़ को राहत देने के लिए राइफ़ल खोल डाली। कई बार उसका दिमाग़ कहीं बहुत दूर चला जाता था और वह यन्त्रवत चलता रहता था; अजीबोग़रीब सनकभरे ख़याल कीड़ों की तरह उसके दिमाग़ में कुलबुलाते रहते थे। लेकिन वास्तविकता से बाहर की ये यात्राएँ संक्षिप्त होती थीं क्योंकि भूख की कचोट उसे वापस खींच लाती थी। एक बार जब वह ऐसी ही एक यात्रा पर था तो एक ऐसे दृश्य ने उसे यथार्थ में धक्का दिया कि वह गश खाते-खाते बचा। वह नशे में धुत व्यक्ति की तरह आगे-पीछे झूलता हुआ गिरने से बचने की कोशिश कर रहा था। उसके सामने एक घोड़ा खड़ा था। घोड़ा! उसे अपनी आँखों पर यक़ीन नहीं हुआ। उनमें घना कुहरा था जिसके बीच-बीच में रोशनी चुँधिया रही थी। उसने अपनी आँखें ज़ोर से रगड़ीं और देखा कि घोड़ा नहीं, वह एक बड़ा-सा भूरा भालू है। जानवर उसे आक्रामक कुतूहल के साथ देख रहा था।

आदमी ने अपनी बन्दूक़ आधी उठायी, तभी उसे ध्यान आया कि वह ख़ाली है। उसने बन्दूक़ नीचे कर ली और कमर पर बँधी म्यान से शिकारी चाकू निकाला। उसके सामने मांस और जीवन था। उसने चाकू की धार पर अँगूठा फिराया। वह तेज़ थी। नोक भी तेज़ थी। वह भालू पर झपटकर उसे मार डालेगा। लेकिन उसका दिल धक्-धक्-धक् की चेतावनी देने लगा; फिर सीने में ज़ोरों से उछलने लगा। उसके माथे को जैसे लोहे के पट्टे ने जकड़ लिया और दिमाग़ चकराने लगा।

उसकी बदहवासी भरी हिम्मत को डर के उबाल ने बेदख़ल कर दिया। अगर उस जानवर ने हमला कर दिया तो क्या होगा? वह जितना तन सकता था, तनकर खड़ा हो

गया, चाकू को कसकर पकड़ लिया और भालू को घूरने लगा। भालू धीरे से दो क़दम आगे बढ़ा, पिछली टाँगों पर खड़ा हो गया और हल्के से गुर्राया। अगर सामने वाला भागेगा तो वह उसका पीछा करेगा; लेकिन आदमी दौड़ा नहीं। अब वह डर से उपजी हिम्मत से काम कर रहा था। वह भी गुर्राया, वहशियों की तरह, भयानक आवाज़ में; इनसान के भीतर गहराइयों में छिपे हर भय को स्वर देते हुए।

भालू डरावने ढंग से गुर्राते हुए एक ओर हट गया। वह खुद इस रहस्यमय प्राणी से आतंकित था जो सीधा खड़ा था और डर नहीं रहा था। लेकिन आदमी हिला नहीं। वह मूरत की तरह खड़ा रहा जब तक कि ख़तरा टल नहीं गया। फिर वह बुरी तरह काँपने लगा और गीली काई में बैठ गया।

उसने खुद को सँभाला और चल पड़ा। अब एक नया डर उस पर तारी हो रहा था। यह चुपचाप भूख से मर जाने का डर नहीं बल्कि यह डर था कि जीने की हर कोशिश भूख के आगे नाकाम होने से पहले ही कहीं उसे हिंसक तरीक़े से ख़त्म न कर दे। वहाँ भेड़िये भी थे। वीराने में सुनायी देती उनकी चीख़ों से हवा एक ऐसे डरावने कफ़न जैसी लगने लगती थी कि कई बार वह अनजाने ही दोनों हाथों से उसे पीछे धकेलने लगता था।

कभी-कभी दो-तीन की टोली में भेड़िये उसकी राह में मिलते थे। लेकिन वे उससे दूर ही रहते थे। एक तो वे पर्याप्त संख्या में नहीं होते थे, दूसरे वे रेण्डियर की ताक में थे जो लड़ते नहीं थे, जबकि सीधा चलने वाला यह अजीब जानवर काट और खरोंच सकता था।

दोपहर बाद उसे बिखरी हुई हड्डियाँ दिखायी दीं। यह भेड़ियों का काम था। यह मलबा आधा घण्टा पहले रेण्डियर का बच्चा था, उछलता-कूदता, किकियाता हुआ। उसने हड्डियों को ग़ौर से देखा। वे चाटकर साफ़ की जा चुकी थीं; अभी वे सूखी नहीं थीं और गुलाबी-सी दिख रही थीं। उनकी कोशिकाएँ अभी ज़िन्दा थीं। क्या पता, दिन

ख़त्म होने से पहले उसका भी यही हश्र हो जाये! ज़िन्दगी ऐसी ही है, प्यारे! कोई भरोसा नहीं! दर्द तो ज़िन्दगी ही देती है। मौत में कोई तकलीफ़ नहीं होती। मरना ऐसे ही है जैसे सो जाना। इसका मतलब था विराम। पूरा आराम। फिर वह मरना क्यों नहीं चाहता था?

लेकिन वह ज़्यादा देर तक नैतिक प्रश्नों में नहीं उलझा। वह काई में उकड़ूँ बैठा था और एक हड्डी को मुँह में लिये जीवन के उन रेशों को चूस रहा था जिनसे उसमें गुलाबी रंगत थी। उसे कुछ मीठा, मांस-जैसा स्वाद मिला; हल्का-सा, बस एक याद जैसा, और वह पागल हो उठा। उसने जबड़ों से ज़ोर से चबाने की कोशिश की। कभी हड्डी टूटी, कभी उसके दाँत। फिर उसने हड्डियों को पत्थरों से कुचला, पीट-पीटकर उनका मलीदा-सा बनाया और निगल गया। हड़बड़ी में उसने अपनी उँगलियाँ भी कुचल लीं। बस एक पल के लिए उसका ध्यान इस ओर गया कि पत्थर के नीचे आने पर भी उसकी उँगलियों में दर्द नहीं हुआ।

बर्फ़ और बारिश के डरावने दिन आ गये थे। उसे पता नहीं चलता था कि कब वह रुकता था और कब चल पड़ता था। वह रात में भी उतना ही सफ़र करता था, जितना दिन में। वह जहाँ भी गिर पड़ता, वहीं सुस्ता लेता था और जब भी उसके भीतर मर रहे जीवन की लौ फड़फड़ाकर जल उठती, वह रेंगना शुरू कर देता था। वह इनसान के तौर पर कोशिश नहीं कर रहा था। यह तो उसके भीतर का जीवन था, जो मरने को तैयार नहीं था और उसे हाँके लिये जा रहा था। उसे कोई पीड़ा नहीं हो रही थी। उसके स्नायु भोथरे और सुन्न हो गये थे, और उसका दिमाग़ अजीबोग़रीब मंजरों और लज़ीज़ सपनों से भरा हुआ था।

वह रेण्डियर की हड्डियों का बचा हुआ हिस्सा अपने साथ ले आया था और बीच-बीच में उन्हें चबाता और चूसता रहता था। अब वह पहाड़ियों या खड़ी चट्टानों को पार नहीं कर रहा था, बल्कि यन्त्रवत् एक चौड़ी धारा के साथ-साथ चल रहा था

जो एक छिछली और विस्तृत घाटी से होकर बह रही थी। उसे न यह धारा दिख रही थी, और न ही घाटी। वह विचित्र दिवास्वप्नों के सिवा कुछ नहीं देख रहा था। उसकी आत्मा और शरीर साथ-साथ चल या रेंग रहे थे, पर वे एक-दूसरे से अलग भी थे। उन्हें जोड़ने वाला धागा बहुत बारीक रह गया था।

वह उठा तो दिमाग़ ठिकाने पर था। वह एक सपाट चट्टान पर चित लेटा हुआ था। सूरज गरम और चमकदार किरणें बिखेर रहा था। दूर से उसे रेण्डियर के बच्चों के किकियाने की आवाज़ सुनायी दे रही थी। उसे बारिश और तेज़ हवा और बर्फ़ की धुँधली-सी याद थी, लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि वह दो दिनों तक तूफ़ान के थपेड़े झेलता रहा है या दो हफ़्तों तक।

कुछ देर तक वह बिना हिले-डुले पड़ा रहा। सुखद धूप उसके बेहाल शरीर को गरमाहट से भर रही थी। उसने सोचा, आज का दिन अच्छा है। शायद वह पता कर सकेगा कि वह कहाँ है। बड़ी तकलीफ़ के साथ उसने करवट बदली। नीचे एक चौड़ी नदी मन्थर गति से बह रही थी। वह एकदम अपरिचित थी जिससे वह उलझन में पड़ गया। उसने धीरे-धीरे इसके बहाव के साथ-साथ नज़रें फिरायीं। दूर तक नीची और उजाड़ पहाड़ियाँ थीं। ऐसी नीची और उजाड़ पहाड़ियाँ उसके रास्ते में अब तक नहीं आयी थीं। धीरे-धीरे, कोशिश करके, बिना उत्तेजित हुए उसने नज़रों को इस विचित्र धारा के साथ-साथ क्षितिज तक जाने दिया और देखा कि वह एक चमकदार, झिलमिलाते सागर में मिल रही है। वह अब भी उत्तेजित नहीं हुआ। उसने सोचा, यह एक अजीब सपना है, नज़रों का धोखा है। उसके परेशान दिमाग़ का छलावाभर है। चमकते समुद्र के बीच में लंगर डाले एक जहाज़ को देखकर उसका ख़याल और पुख्ता हो गया। उसने कुछ देर तक आँखें मूँद लीं, फिर खोलीं। अजीब बात थी! वह छलावा अब भी नज़रों के सामने था। नहीं, इसमें कुछ अजीब नहीं था। वह जानता था कि उजाड़ इलाक़ों के बीच में कोई समुद्र या जहाज़ नहीं हो सकता, वैसे ही, जैसे उसे

मालूम था कि ख़ाली राइफ़ल के चैम्बर में कोई कारतूस नहीं था।

उसने अपने पीछे एक आवाज़ सुनी – दबी-दबी सी खाँसी या छींक की आवाज़। बेहद कमज़ोरी और जकड़न की वजह से उसने बहुत धीरे से दूसरी ओर करवट ली। उसे अपने क़रीब कुछ दिखायी नहीं दिया, लेकिन वह धीरज से इन्तज़ार करता रहा। खाँसी और सूँ-सूँ की आवाज़ फिर आयी, और उसने क़रीब बीस फ़ीट दूर, दो नुकीले पत्थरों के बीच एक भेड़िये का सिर देखा। उसके नुकीले कान उस तरह खड़े नहीं थे जैसे उसने दूसरे भेड़ियों के देखे थे; आँखें धुँधलायी और सुर्ख़ लाल थीं और सिर उदासी से ढुलका हुआ-सा था। जानवर बार-बार धूप में आँखें मिचमिचा रहा था। वह बीमार लग रहा था। आदमी को अपनी ओर देखता देखकर वह एक बार खाँसा और उसके नथुनों से सूँ-सूँ की आवाज़ आयी।

उसने सोचा, कम-से-कम यह तो सच है, और फिर दूसरी ओर मुड़ा ताकि उस दुनिया की सच्चाई देख सके जिसे उस छलावे ने ढँक दिया था। लेकिन दूरी पर समुद्र अब भी झिलमिला रहा था और जहाज़ साफ़ पहचाना जा सकता था। क्या वाक़ई यह सच था? वह आँखें मूँदकर देर तक सोचता रहा, और फिर एकाएक उसे समझ आ गया। वह उत्तर-पूर्व की ओर चलता रहा था, डीज नदी से दूर कॉपरमाइन की घाटी में। यह चौड़ी और मन्थर नदी कॉपरमाइन थी। वह झिलमिलाता समुद्र आर्कटिक सागर था। वह जहाज़ व्हेल के शिकारियों का था जो मैकेंजी के मुहाने से पूरब, बहुत पूरब में चला आया था और कोरोनेशन खाड़ी में लंगर डाले खड़ा था। उसे बहुत पहले देखा हुआ हडसन बे कम्पनी का चार्ट याद हो आया, और अब उसे सब साफ़-साफ़ समझ आने लगा।

वह उठ बैठा और फ़ौरी मामलों पर ध्यान दिया। कम्बलों की पट्टियाँ पूरी तरह घिस चुकी थीं और उसके पैर मांस के लोथड़े भर रह गये थे। उसका आख़िरी कम्बल भी जा चुका था। राइफ़ल और चाकू भी ग़ायब थे। उसका टोप कहीं गिर गया था

जिसके भीतर के फीते में माचिस की तीलियाँ थीं, लेकिन उसकी क़मीज़ के अन्दर और तम्बाकू की थैली में मोमिया काग़ज़ में लिपटी तीलियाँ सुरक्षित थीं। उसने घड़ी पर नज़र डाली। उसमें ग्यारह बजे थे, और वह अब भी चल रही थी। जाहिर है, वह इसमें चाभी भरता रहा था।

वह शान्त और स्थिरचित्त था। वह बेहद कमज़ोर हो गया था पर उसे दर्द का ज़रा भी अहसास नहीं था। वह भूखा भी नहीं था। खाने का ख़याल अब उसे अच्छा भी नहीं लगता था और वह जो कुछ भी करता था बस दिमाग़ के निर्देश पर। उसने अपनी पतलून घुटनों तक फाड़ डाली और उसे पैरों पर लपेट लिया। टीन की बाल्टी किसी तरह अब भी उसके पास बची रह गयी थी। जहाज़ तक का सफ़र शुरू करने से पहले वह थोड़ा गरम पानी पियेगा। वह जानता था कि यह एक भयानक सफ़र होगा।

उसकी हरकतें बहुत धीमी थीं। वह मिर्गी के दौरे की तरह काँपने लगा। जब उसने सूखी काई बटोरना शुरू किया तो उसने पाया कि वह अपने पाँवों पर खड़ा नहीं हो पा रहा है। एक बार वह बीमार भेड़िये के पास तक रेंगकर गया। जानवर घिसटकर उसके रास्ते से हट गया। उसने अपने जबड़ों पर मुश्किल से ज़ुबान फिरायी। आदमी ने देखा कि ज़ुबान पर स्वास्थ्य की लाली नहीं थी। वह पीलापन लिये भूरे रंग की थी और उस पर आधे सूखे बलगम की परत चढ़ी थी।

क़रीब एक लीटर गरम पानी पीने के बाद आदमी ने पाया कि वह खड़ा हो सकता है और उस तरह चल भी सकता है, जैसे किसी मरते आदमी से चलने की उम्मीद की जा सकती है। हर एकाध मिनट पर उसे सुस्ताने के लिए रुकना पड़ता था। उसके क़दम कमज़ोर और अस्थिर थे, वैसे ही जैसे उसका पीछा कर रहे भेड़िये के क़दम कमज़ोर और अस्थिर थे; और उस रात, जब झिलमिलाते समुद्र को अँधेरे ने ढँक लिया, तो उसने हिसाब लगाया कि दिनभर में उसकी दूरी बस चार मील कम हुई है।

सारी रात वह बीमार भेड़िये की खाँसी और बीच-बीच में रेण्डियर के बच्चों का

किकियाना सुनता रहा। उसके चारों ओर जीवन था, लेकिन वह ताक़त से भरपूर जीवन था, पूरी तरह जीवन्त और सक्रिय, जबकि वह जानता था कि बीमार भेड़िया बीमार आदमी के पीछे इसी उम्मीद में लगा हुआ था कि आदमी पहले मरेगा। सुबह, आँखें खोलने पर उसने भेड़िये को अपनी ओर लालसाभरी, भूखी नज़र से घूरते देखा। वह एक भटके हुए बेचारे कुत्ते की तरह अपनी दुम टाँगों के बीच दबाये दुबका खड़ा था। सुबह की सर्द हवा में वह काँप रहा था और जब भर्रायी हुई फुसफुसाहट की आवाज़ में आदमी ने उससे कुछ कहा तो उसने बेजान तरीक़े से खींसें निपोर दीं।

खुली धूप थी और सारी सुबह वह आदमी उठता-गिरता झिलमिलाते समुद्र में खड़े जहाज़ की ओर चलता रहा। मौसम एकदम खुशगवार था। यह 'इण्डियन समर' (ध्रुवीय प्रदेश का कुछ ही दिन चलने वाला गर्मियों का मौसम – अनु.) था। यह एक हफ़्ते तक रह सकता था; या फिर हो सकता था कि कल, या उसके अगले दिन यह ख़त्म हो जाये।

दोपहर में आदमी को किसी और के पगचिह्न दिखायी दिये। यह किसी आदमी के थे जो चलकर नहीं बल्कि घुटनों के बल रेंगकर गया था। उसने सोचा कि ये बिल के पगचिह्न हो सकते हैं, पर उसे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं महसूस हुई। उसे कोई उत्सुकता नहीं हुई। दरअसल, उसमें भावना और संवेदना मर चुकी थी। उसे अब पीड़ा की अनुभूति नहीं होती थी। उसका पेट और स्नायु सो चुके थे। पर उसके भीतर शेष जीवन उसे हाँके जा रहा था। वह थक चुका था पर उसके भीतर प्राण मरने को राजी नहीं था। वह मरने को राजी नहीं था, इसलिए वह अब भी मस्केग बेरियाँ और नन्ही मछलियाँ खाता था, गरम पानी पीता था और बीमार भेड़िये पर सतर्क दृष्टि रखता था।

वह रेंगकर चलने वाले दूसरे आदमी की लीक के पीछे चलता रहा और जल्दी ही वहाँ पहुँचा जहाँ यह ख़त्म हो गयी थी – हाल ही में चबाई गयी हड्डियों का एक ढेर, जिसके इर्द-गिर्द की गीली काई पर कई भेड़ियों के पंजों के निशान थे। उसने बारहसिंगे

के चमड़े की एक मोटी थैली देखी, अपनी वाली जैसी ही। नुकीले दाँतों ने उसे फाड़ दिया था। उसने थैली को उठाया, हालाँकि उसका वज़न उसकी कमज़ोर उँगलियों के लिए बहुत ज़्यादा था। तो बिल इसे आख़िर तक ले आया था। हा! हा! अब वह बिल पर हँस सकता था। आख़िर जीत उसकी हुई। वह ज़िन्दा रहेगा और झिलमिलाते समुद्र में खड़े जहाज़ तक इसे ले जायेगा। उसकी हँसी भयावह और कर्कश थी, कौवे की काँव-काँव जैसी, और बीमार भेड़िया भी उसके साथ कारुणिक स्वर में हुआने लगा। आदमी अचानक रुक गया। भला वह बिल से बदला कैसे ले सकता था, अगर बिल यह था; अगर ये गुलाबी-सफ़ेद, सफाचट हड्डियाँ बिल थीं?

उसने मुँह घुमा लिया। ठीक है, बिल उसे मुसीबत में अकेला छोड़ गया था; पर वह इस सोने को नहीं लेगा, न ही बिल की हड्डियाँ चूसेगा। हालाँकि, अगर उसकी जगह बिल होता तो ज़रूर ऐसा करता; चलते-चलते उसके मन में यह ख़याल उभरा। वह एक गड्ढे में भरे साफ़ पानी के पास पहुँचा। मछलियों की तलाश में झुकते ही उसने एकदम से सिर पीछे हटाया, जैसे डंक लगा हो। उसने पानी में अपनी परछाईं देख ली थी। वह चेहरा इतना भयानक था कि मरी हुई संवेदना भी पलभर के लिए चौंककर जाग गयी। कुण्ड में तीन मछलियाँ थीं। उसे ख़ाली करना नामुमकिन था और बाल्टी से उन्हें पकड़ने की कई नाकाम कोशिशों के बाद उसने हार मान ली। उसे डर था कि कमज़ोरी की वजह से वह कहीं गड्ढे में गिरकर डूब न जाये। इसी डर से वह नदी के किनारे पड़े तमाम लकड़ी के कुन्दों में से किसी पर सवार होकर जाने की भी हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था।

उस दिन उसने अपने और जहाज़ के बीच की दूरी तीन मील और कम की; और अगले दिन दो मील – क्योंकि अब वह बिल की तरह रेंग रहा था; और पाँचवाँ दिन ख़त्म हुआ तो जहाज़ अब भी सात मील दूर था और वह दिनभर में एक मील तय करने लायक़ भी नहीं रह गया था। लेकिन इण्डियन समर अब भी जारी था और वह रेंगते,

फिर गश खाते, फिर रेंगते, फिर लुढ़कते हुए आगे बढ़ता रहा, और बीमार भेड़िया खाँसते और झींकते उसके पीछे लगा रहा। उसके घुटने भी पैरों की तरह मांस के लोथड़े बन गये थे, और हालाँकि उसने क़मीज़ फाड़कर उन पर लपेट ली थी लेकिन रेंगते हुए वह पत्थरों और काई पर लाल लकीर छोड़ता जा रहा था। एक बार, उसने पीछे नज़र घुमायी तो देखा कि भेड़िया उसके ख़ून की लकीर को चाट रहा है, और उसे एकदम से अपना अन्त अपनी आँखों के सामने दिखायी दे गया। इससे बचने का एक ही तरीक़ा था – कि वह ख़ुद भेड़िये को ख़त्म कर दे। फिर जीवन की एक भयावह दुखान्तिकी शुरू हुई – एक रेंगता हुआ बीमार इनसान, एक लँगड़ाता हुआ बीमार भेड़िया, अपने मरते शवों को वीराने के पार घसीटकर ले जाते दो प्राणी जो एक-दूसरे की जान के प्यासे थे।

अगर वह कोई तगड़ा भेड़िया होता तो शायद उस आदमी को ज़्यादा फ़र्क़ नहीं पड़ता; लेकिन उस घृणित और लगभग मृत चीज़ के पेट में समाने का विचार ही वितृष्णा पैदा कर रहा था। उसका मन फिर भटकने और विचित्र दिवास्वप्नों में खोने लगा था जबकि ऐसे दौर लगातार छोटे होते जा रहे थे जब वह साफ़-साफ़ सोच सकता था।

एक बार उसकी बेहोशी कान के पास सिसकारी की आवाज़ से टूटी। भेड़िया उछलकर पीछे हटा और कमज़ोरी की वजह से लड़खड़ाकर गिर गया। यह दृश्य मज़ाक़िया था पर उसे मज़ा नहीं आया। उसे डर भी नहीं लगा। वह इस सबसे परे जा चुका था। लेकिन कुछ देर के लिए उसका दिमाग़ साफ़ हो गया और वह लेटे-लेटे सोचने लगा। जहाज़ अब चार मील से ज़्यादा दूर नहीं था। आँखों को रगड़कर कुहासा छाँट देने के बाद वह उसे साफ़ देख सकता था और झिलमिलाते समुद्र के पानी पर चलती एक छोटी नाव का सफ़ेद पाल भी उसे दिख रहा था। लेकिन वह चार मील तक कभी रेंग नहीं पायेगा। वह यह बात जानता था कि वह आधा मील भी नहीं रेंग सकता

था। पर फिर भी वह जीना चाहता था। यह ठीक नहीं था कि इतना सब कुछ सहने के बाद वह मर जाये। क़िस्मत उससे बहुत ज़्यादा तकाजा कर रही थी। और, मरते हुए भी, उसने मरने से इनकार कर दिया। शायद यह निरा पागलपन था, लेकिन मौत के पंजे में जकड़े हुए भी उसने मौत को धता बता दी और मरना नामंजूर कर दिया।

उसने आँखें बन्द कर लीं और भरपूर सावधानी से ध्यान केन्द्रित कर लिया। उसने जी कड़ा कर लिया और उस दमघोंटू शिथिलता को खुद पर हावी नहीं होने दिया जो उसके पूरे बदन में ज्वार की तरह उठ रही थी। यह घातक शिथिलता समुद्र जैसी ही थी, जो धीरे-धीरे उसकी चेतना को डुबो देना चाहती थी। कभी-कभी वह लगभग डूब ही जाता था; पर विस्मृति के सागर में हाथ-पैर फेंकते हुए अचानक आत्मा की किसी अजीब कीमियागिरी की बदौलत इच्छाशक्ति का कोई तिनका उसके हाथ लग जाता था और वह सधे ढंग से हाथ चलाने लगता था।

वह बिना हिले-डुले चित लेटा रहा। वह बीमार भेड़िये की साँसों की घरघराहट को पास आता सुन सकता था। वह पास आया, और पास; इतना धीरे-धीरे कि उसे लगा समय बीत ही नहीं रहा है।

आदमी ने कोई हरकत नहीं की। भेड़िये की साँसें अब उसके कान पर थीं। खुरदुरी, सूखी ज़ुबान ने रेगमाल की तरह उसके गाल को रगड़ा। उसके हाथ गोली की तरह झपटे – कम-से-कम उसने चाहा कि वे गोली की तरह झपटें। उसकी उँगलियाँ नुकीले पंजों की तरह मुड़ी हुई थीं, लेकिन वे हवा पकड़कर रह गयीं। फ़ुर्ती और सटीकपन के लिए ताक़त चाहिए थी, पर आदमी में इतनी ताक़त नहीं थी।

भेड़िये में ग़ज़ब का धीरज था। आदमी का धीरज भी कम नहीं था। आधे दिन तक वह बेहरकत पड़ा रहा, बेहोशी से लड़ते और उस चीज़ का इन्तज़ार करते हुए जो उसका शिकार करना चाहती थी और वह खुद जिसका शिकार करना चाहता था। कभी-कभी वह शान्त समुद्र उस पर हावी हो जाता और वह लम्बे सपनों में डूब जाता,

लेकिन इस सबके बीच वह उस घुरघुराती साँस और खुरदुरी जुबान की छुअन का इन्तज़ार करता रहा।

उसने साँस की आवाज़ नहीं सुनी और हाथ पर जुबान के स्पर्श से वह एक स्वप्न से धीरे-धीरे जागा। वह इन्तज़ार करता रहा। भेड़िये के दाँत उसके हाथ पर धीरे से गड़े; दबाव बढ़ने लगा; भेड़िया उस भोजन में दाँत गड़ाने के लिए अपनी सारी ताक़त लगा रहा था, जिसके लिए उसने इतना लम्बा इन्तज़ार किया था। लेकिन आदमी काफ़ी इन्तज़ार कर चुका था और छिदे हुए हाथ ने जबड़ा पकड़ लिया। धीरे से। भेड़िया छुड़ाने की कमज़ोर कोशिश कर रहा था और आदमी की पकड़ भी कमज़ोर थी। फिर उसके दूसरे हाथ ने भी आकर जबड़े को पकड़ लिया। पाँच मिनट बाद आदमी के शरीर का पूरा वज़न भेड़िये के ऊपर था। हाथों में इतनी ताक़त नहीं थी कि भेड़िये का गला घोंट सकें, लेकिन आदमी का चेहरा भेड़िये की गर्दन के पास था और उसका मुँह बालों से भरा था। आधे घण्टे बाद आदमी को अपने गले में एक गरम धार का अहसास हुआ। यह सुखद नहीं था। यह ऐसा था जैसे उसके पेट में ज़बरदस्ती पिघला सीसा धकेला जा रहा हो, और सिर्फ़ उसकी इच्छाशक्ति ही थी जो इसे धकेल रही थी। इसके बाद आदमी लुढ़ककर पीठ के बल लेटा और सो गया।

व्हेल का शिकार करने वाले जहाज़ बेडफ़ोर्ड पर एक वैज्ञानिक अभियान दल के कुछ सदस्य भी थे। जहाज़ के डेक से उन्होंने तट पर एक अजीब सी चीज़ देखी। वह रेतीले तट को पार करती हुई पानी की ओर आ रही थी। वे इसका वर्गीकरण नहीं कर पा रहे थे, और चूँकि वे वैज्ञानिक लोग थे, इसलिए उसे देखने के लिए जहाज़ के साथ लगी व्हेल-बोट में सवार होकर तट पर गये। उन्होंने एक ऐसी चीज़ देखी जो ज़िन्दा थी पर जिसे इनसान कहना मुश्किल था। वह दृष्टिहीन थी, और चेतनाविहीन भी। वह किसी विशाल कीड़े की तरह ज़मीन पर रेंगती हुई चल रही थी। उसकी ज़्यादातर

कोशिशें निष्प्रभावी थीं, लेकिन वह अनवरत ऐंठते, बल खाते हुए शायद बीस फ़ीट प्रति घण्टे की रफ़्तार से आगे ही बढ़ रही थी।

इसके तीन हफ़्ते बाद वह आदमी बेडफ़ोर्ड के एक केबिन में लेटा था। उसके सूखे गालों पर आँसू ढुलक रहे थे और वह बता रहा था कि वह कौन है और उस पर क्या बीती है। वह अपनी माँ, धूपभरे दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया और सन्तरे के बग़ीचों और फूलों से घिरे एक घर के बारे में भी बहकी-बहकी बातें कर रहा था।

इसके कुछ दिन बाद वह वैज्ञानिकों और जहाज़ के अफ़सरों के साथ खाने की मेज़ पर बैठा था। इतने सारे खाने को देखकर उसकी आँखें फटी पड़ रही थीं और इसे औरों के मुँह में जाते देखकर वह बेचैन हो रहा था। हर निवाले के मुँह में जाते ही उसकी आँखों में गहरे पछतावे का भाव आ जाता था। उसका दिमाग़ एकदम दुरुस्त था, फिर भी खाने के समय वह उन लोगों से नफ़रत करता था। उसे यह डर सताता रहता था कि यह खाना ख़त्म हो जायेगा। वह खाने के भण्डार के बारे में केबिन ब्वॉय और रसोइये से लेकर जहाज़ के कैप्टन तक से पूछता रहता था। वे अनगिनत बार उसे आश्वस्त कर चुके थे, पर वह उन पर यक़ीन नहीं करता था, और खुद अपनी आँखों से देखने के लिए भण्डारख़ाने में चुपचाप जाकर छानबीन करता रहता था।

लोगों ने देखा कि वह आदमी मोटा हो रहा है। हर बीतते दिन के साथ उसका मोटापा बढ़ता जा रहा था। वैज्ञानिक अचरज से सिर हिलाते और तरह-तरह के सिद्धान्त पेश करते थे। उन्होंने उसका खाना कम कर दिया, फिर भी उसका पेट निकलता ही गया।

जहाज़ी यह सब देखकर हँसते थे। वे इसका राज जानते थे। और जब वैज्ञानिकों ने आदमी पर नज़र रखनी शुरू की तो वे भी जान गये। उन्होंने देखा कि नाश्ते के बाद वह अपनी बेढंगी चाल से किसी जहाज़ी के पास जाता था और भिखारी की तरह उसके सामने हाथ फैला देता था। जहाज़ी हँसते हुए उसे बिस्कुट का एक टुकड़ा पकड़ा देता

था। वह लालची निगाह से उसे देखता था, जैसे कोई कंजूस सोने को देखता है, और फिर उसे अपनी क़मीज़ के अन्दर डाल लेता था। दूसरे जहाज़ी भी हँसते हुए ऐसा दान करते रहते थे।

वैज्ञानिक समझदार थे। उन्होंने उसे अकेला छोड़ दिया। लेकिन उन्होंने चुपके से उसका बिस्तर देखा। उसके किनारे-किनारे सख़्त जहाज़ी बिस्कुट की ढेरियाँ थीं। उसके गद्दे में बिस्कुट भरा था; हर कोना-अँतरा बिस्कुट से भरा था। फिर भी उसका दिमाग़ एकदम दुरुस्त था। वह किसी और सम्भावित संकट से बचाव के उपाय कर रहा था – बस इतनी-सी बात थी। वैज्ञानिकों ने कहा कि वह इससे उबर जायेगा; और सैन फ़्रांसिस्को की खाड़ी में बेडफ़ोर्ड के लंगर डालने से पहले वह उबर गया।

आग

दिन की शुरुआत ठण्डी और धूसर थी, बेहद ठण्डी और धूसर, जब वह आदमी युकोन के मुख्य रास्ते से मुड़ा और मिट्टी के उस ऊँचे कगार पर चढ़ा जहाँ से एक धुँधली और कम इस्तेमाल होने वाली पगडण्डी घनी झाड़ियों से होती हुई पूरब की ओर जाती थी। यह एक खड़ा कगार था और ऊपर पहुँचकर वह दम लेने के लिए रुका। रुकने को खुद अपनी नज़र में जायज़ ठहराने के लिए वह घड़ी देखने लगा। नौ बज रहे थे। आसमान में बादल का एक क़तरा भी नहीं था पर सूरज का नामोनिशान नहीं दिख रहा था। दिन साफ़ था, फिर भी लगता था जैसे हर चीज़ पर अगोचर-सा पर्दा पड़ा हुआ है, एक हल्की-सी धुँध छायी हुई थी जिसने दिन को अँधेरा-अँधेरा कर रखा था। ऐसा सूरज की अनुपस्थिति के कारण था। वह आदमी इससे चिन्तित नहीं हुआ। उसे सूरज के ग़ायब रहने की आदत हो गयी थी। सूरज को देखे हुए उसे कई दिन हो गये थे और वह जानता था कि अभी कुछ और दिन ऐसे ही बीतेंगे तब कहीं जाकर वह खुशनुमा गोला दक्षिणायन से अचानक क्षितिज के ऊपर झाँकेगा और फ़ौरन ही आँख से ओझल हो जायेगा।

उस आदमी ने मुड़कर उस रास्ते पर नज़र डाली जिधर से वह आया था। मील-भर चौड़ी युकोन नदी बर्फ़ की तीन फ़ीट मोटी चादर के नीचे छुपी हुई थी। इस जमी हुई बर्फ़ के ऊपर कम-से-कम तीन फ़ीट ताज़ा बर्फ़ पड़ी थी। यह सब एकदम शुद्ध सफ़ेद था, और जहाँ-जहाँ जमी हुई बर्फ़ उभरी हुई थी वहाँ हवा से हल्की तरंगे-सी दिख रही थीं। उत्तर से दक्षिण तक, जहाँ तक उसकी नज़र जा रही थी, एक अटूट सफ़ेदी पसरी हुई थी; बस एक काली, बाल-जैसी रेखा फ़र के पेड़ों से ढँके टापू से शुरू होती थी

और बल खाती हुई दूर उत्तर की ओर चली गयी थी जहाँ वह फ़र के पेड़ों से ढँके एक और टापू के पीछे गुम हो जा रही थी। यह काली रेखा पगडण्डी थी – मुख्य पगडण्डी – जो दक्षिण में पाँच सौ मील दूर चिलकूट पास, दाइया और साल्टवाटर तक जाती थी और उत्तर में सत्तर मील दूर डॉसन, फिर हज़ार मील दूर नुलाटो और फिर डेढ़ हज़ार मील उत्तर में बेरिंग सागर पर सेण्ट माइकल तक पहुँचती थी।

लेकिन यह सब – रहस्यमय, दूर तक जाती पतली-सी पगडण्डी, आसमान में सूरज की ग़ैरमौजूदगी, भयंकर ठण्ड और चारों ओर व्याप्त विचित्रता और अद्‌भुतपन – उस आदमी पर कोई असर नहीं डाल रहे थे। ऐसा इसलिए नहीं था कि उसे इस सबकी लम्बे समय से आदत हो गयी थी। वह इस इलाक़े में नवागन्तुक था, जिसे यहाँ चेचाको कहते थे, और यह उसका पहला जाड़ा था। उसके साथ दिक़्क़त यह थी कि वह कल्पनाविहीन था। जीवन की ज़रूरी चीज़ों के मामले में वह सतर्क और फ़ुर्तीला था, लेकिन बस चीज़ों के मामले में, उनकी अहमियत को समझने में नहीं। शून्य से पचास डिग्री से नीचे का मतलब था, हिम की क़रीब अस्सी डिग्री। ऐसे तथ्य का उसके लिए एक ही मतलब था कि ठण्ड और कष्ट बढ़ेंगे – बस और कुछ नहीं। यह उसे समशीतोष्ण प्राणी के रूप में अपनी दुर्बलता, या गरमी और ठण्ड की कुछ संकीर्ण सीमाओं के भीतर ही जी सकने की मनुष्य-मात्र की दुर्बलता के बारे में सोचने को प्रेरित नहीं करता था; नश्वरता-अनश्वरता और ब्रह्माण्ड में मनुष्य की स्थिति जैसी बातों पर चिन्तन करने का तो सवाल ही नहीं था। शून्य से पचास डिग्री नीचे का मतलब था तकलीफ़देह पाले की चुभन जिससे बचने के लिए दस्ताने, कान ढँकने वाली टोपी, चमड़े के गरम जूते और मोटी जुराबें ज़रूरी थीं। शून्य से पचास डिग्री नीचे का मतलब उसके लिए बस शून्य से पचास डिग्री नीचे था। उसके दिमाग़ में यह ख़याल भी नहीं आता था कि इसमें कोई और भी बात हो सकती है।

मुड़कर चलते हुए उसने अनुमान लगाने के लिए थूका। तेज़, धमाकेदार चटाख की

आवाज़ हुई जिससे वह चौंक पड़ा। उसने फिर थूका। इस बार भी, बर्फ़ पर गिरने से पहले, हवा में ही थूक कड़कड़ा गया। वह जानता था कि पचास डिग्री नीचे की ठण्ड में बर्फ़ पर गिरते ही थूक कड़कड़ा जाता था, लेकिन यह थूक तो हवा में ही जमकर चटख गया था। बिलाशक, तापमान पचास डिग्री से ज़्यादा नीचे था – कितना नीचे, यह कहना मुश्किल था। लेकिन तापमान से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था। वह हेण्डरसन क्रीक की बायीं उपधारा के किनारे की पुरानी खदान की ओर जा रहा था जहाँ उसके साथी पहले से मौजूद थे। वे इण्डियन क्रीक के इलाक़े से जमी हुई नदी को पार करके आये थे, जबकि वह घूमकर दूसरे रास्ते से आया था ताकि बसन्त में युकोन के टापुओं से लकड़ी के कुन्दे निकालने की सम्भावना का पता लगा सके। यह सही था कि शिविर में वह छह बजे तक, यानी अँधेरा हो जाने के कुछ देर बाद पहुँचेगा, लेकिन बाक़ी सब वहाँ होंगे, आग जल रही होगी और गरमागरम खाना तैयार मिलेगा। दिन के खाने की बात सोचकर उसका हाथ जैकेट के नीचे से उभरी पोटली पर चला गया। रूमाल में लिपटी पोटली उसकी क़मीज़ के अन्दर थी, नंगी चमड़ी से सटी हुई। बिस्कुटों को जम जाने से बचाने का यही एक तरीक़ा था। इन बिस्कुटों के ख़याल पर वह मन-ही-मन मुस्कुरा उठा – हर बिस्कुट बेकन ग्रीज़ में लिपटा हुआ था और बीच से चीरकर उसमें तले बेकन का कतला रखा था।

वह बड़े फ़र वृक्षों के बीच से घुसकर चल पड़ा। रास्ता धुँधला-सा पता चल रहा था। आख़िरी स्लेज गाड़ी के गुज़रने के बाद से एक फुट बर्फ़ गिर चुकी थी और वह खुश था कि वह बिना स्लेज के आया था, कोई वज़नी सामान नहीं था उसके पास; बल्कि, रूमाल में लिपटे खाने के सिवा उसके पास कुछ भी नहीं था। लेकिन ठण्ड से उसे हैरत हो रही थी। सुन्न हुई नाक और गालों की हड्डियों को दस्ताना चढ़े हाथों से मलते हुए वह इस नतीजे पर पहुँचा कि ठण्ड कुछ ज़्यादा ही है। उसके घने गुलमुच्छे थे लेकिन चेहरे के बाल गालों की उभरी हुई हड्डियों और पाले से सर्द हवा में उद्धत ढंग

से आगे निकली नाक का बचाव नहीं कर सकते थे।

आदमी के पीछे-पीछे एक बड़ा-सा हस्की नस्ल का कुत्ता चल रहा था। वह एक असल भेड़िया-कुत्ता था। उसकी खाल धूसर रंग की थी और बनावट या मिजाज़ में वह अपने भाई, जंगली भेड़िये से अलग नहीं लगता था। ज़बरदस्त ठण्ड से वह जानवर परेशान और खिन्न था। वह जानता था कि यह समय सफ़र करने का नहीं है। उसकी मूलवृत्तियाँ उसे आदमी के अनुमान के मुक़ाबले ज़्यादा सटीक जानकारी दे रही थीं। दरअसल ठण्ड शून्य से पचास डिग्री नीचे ही नहीं थी; यह साठ डिग्री से भी ज़्यादा, सत्तर से भी ज़्यादा नीचे थी। ठण्ड शून्य से पचहत्तर डिग्री नीचे थी। हिमांक शून्य से बत्तीस डिग्री ऊपर होता है तो इसका मतलब था कि हिम की 107 डिग्री मौजूद थी। कुत्ते को थर्मामीटरों के बारे में कुछ नहीं मालूम था। शायद उसके मस्तिष्क में अत्यधिक ठण्ड की स्थिति की वैसी स्पष्ट चेतना नहीं थी, जैसी उस आदमी के मस्तिष्क में थी। लेकिन उस पशु के पास अपनी मूलवृत्ति थी। उसे एक अस्पष्ट लेकिन डरावनी आशंका का अनुभव हो रहा था जो उस पर हावी हो गयी थी और जिसकी वजह से वह चुपचाप आदमी के पीछे-पीछे चला जा रहा था। इस आशंका के कारण वह उस आदमी की हर अनभ्यस्त हरकत पर उत्सुक प्रश्नाकुल निगाहों से देखता था, मानो उम्मीद कर रहा हो कि वह खेमा गाड़ेगा या फिर कहीं आसरा लेकर आग जलायेगा। कुत्ता आग से परिचित था और वह इस समय आग चाहता था, या फिर बर्फ़ में गड्ढा खोदकर गुड़ी-मुड़ी होकर अपने शरीर की गरमी को सर्द हवा से बचाना चाहता था।

उसकी साँस की नमी उसकी रोयेंदार खाल पर बर्फ़ के महीन चूरे की तरह जम गयी थी, ख़ासकर उसके जबड़े, थूथन और बरौनियाँ उसकी जमी हुई साँसों से सफ़ेद हो गयी थीं। उस आदमी की लाल दाढ़ी और मूँछें भी ऐसे ही बर्फ़ से ढँकी थीं लेकिन वह ज़्यादा ठोस जम गयी थीं। हर गरम, नम साँस के साथ जमी हुई बर्फ़ बढ़ती जाती

थी। इसके अलावा वह आदमी तम्बाकू चबा रहा था और बर्फ़ का जाबा उसके होंठों को इतना कसकर जकड़े हुए था कि जब भी वह तम्बाकू का रस थूकने की कोशिश करता, वह उसकी ठोड़ी से आगे नहीं जा पाता था। नतीजा यह था कि उसकी ठोड़ी पर ऐम्बर का रंग और ठोसपन लिये हुए एक क्रिस्टल जैसी दाढ़ी बढ़ती जा रही थी। अगर वह गिर पड़े तो यह दाढ़ी टूटकर काँच की तरह छोटी-छोटी किरिचों में बिखर जायेगी। लेकिन उसे इस लटकन से परेशानी नहीं थी। इस इलाक़े में तम्बाकू चबाने वाले को यह सज़ा तो भुगतनी ही पड़ती थी, और वह पहले भी दो बार इसी तरह अचानक बढ़ी ठण्ड में बाहर रह चुका था। वह जानता था कि उन मौक़ों पर ऐसी ठण्ड नहीं थी, लेकिन सिक्स्टी माइल में लगे स्पिरिट थर्मामीटर में एक बार पचास डिग्री नीचे और एक बार पचपन डिग्री नीचे दर्ज़ किया गया था।

वह कई मील तक जंगल के बीच से गुज़रता रहा, ठिंगनी काली झाड़ियों से भरा एक चौड़ा मैदान पार किया और कगार से नीचे उतरकर एक नाले की जमी हुई सतह पर चलने लगा। यह हेण्डरसन क्रीक थी, और वह जान गया कि यह जगह वहाँ से दस मील दूर है जहाँ से इसकी उपधाराएँ शुरू होती थीं। उसने घड़ी देखी। दस बज रहे थे। वह एक घण्टे में चार मील तय कर रहा था और उसने हिसाब लगाया कि उपधाराओं तक वह साढ़े बारह बजे पहुँच जायेगा। उसने तय किया कि इस मौक़े का जश्न वह वहीं पर खाना खाकर मनायेगा।

कुत्ता फिर उसके पीछे-पीछे चल पड़ा लेकिन उसकी नीचे गिरी हुई पूँछ उसकी हताशा का पता दे रही थी। स्लेज गाड़ियों के चलने से बनी लीक का पता तो चल रहा था लेकिन आख़िरी गाड़ी के निशान बारह-तेरह इंच बर्फ़ से ढँक चुके थे। एक महीने में कोई भी आदमी उस ख़ामोश क्रीक से आया-गया नहीं था। वह आदमी सधी रफ़्तार से चलता रहा। यूँ भी वह ज़्यादा सोचने वाला व्यक्ति नहीं था और ख़ासकर इस समय उसके पास सोचने के लिए इसके सिवा कुछ नहीं था कि वह उपधाराओं के पास खाना

खायेगा और छह बजे वह शिविर में बाक़ी बन्दों के साथ होगा। बातें करने के लिए कोई था नहीं; और अगर होता तो भी मुँह पर लगे बर्फ़ के जाबे की वजह से बोलना नामुमकिन ही होता। इसलिए वह एकरस ढंग से तम्बाकू चबाता रहा और अपनी ऐम्बर के रंग की दाढ़ी को लम्बा करता रहा।

बीच में यह ख़याल अपने को दोहराता था कि ठण्ड बहुत अधिक है और उसे पहले कभी ऐसी ठण्ड का अनुभव नहीं हुआ है। चलते-चलते वह दस्ताने चढ़े हाथ के पिछले हिस्से से गालों की हड्डियों और नाक को रगड़ता था। उसका कभी दायाँ तो कभी बायाँ हाथ अपने आप ही चेहरे पर चला जाता था। लेकिन वह चाहे जितना रगड़े, हाथ रोकते ही उसके गालों की हड्डियाँ सुन हो जाती थीं और अगले ही पल उसकी नाक का सिरा सुन्न हो जाता था। यह तो तय था कि उसके गालों को पाला मार जायेगा; वह यह बात जानता था, और उसे यह सोचकर पछतावा हुआ कि उसने नाक पर बाँधने वाली पट्टी नहीं बनायी। बड तो ऐसी ठण्ड में इस पट्टी के बिना नहीं निकलता था। यह पट्टी गालों से होकर गुज़रती थी और उनका भी बचाव करती थी। लेकिन इससे कुछ ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ता था। पाला खाये गालों से क्या होना था? बस ज़रा तकलीफ़ होती; इनसे कोई गम्भीर नुक़सान नहीं होना था।

आदमी का दिमाग़ विचारों से ख़ाली था, पर उसकी आँखें चौकन्नी थीं और वह क्रीक में आने वाले हर बदलाव पर ध्यान दे रहा था। हर मोड़ और घुमाव और फँसी हुई लकड़ियों के ढेरों को वह ग़ौर से देखता और हर क़दम देख-देखकर रखता था। एक बार, एक मोड़ से घूमते ही वह अचानक चौंके हुए घोड़े की तरह बचकर किनारे हटा और कई क़दम पीछे चला गया। वह जानता था कि यह नाला सीधे तलहटी तक जमा हुआ है – आर्कटिक की इस सर्दी में किसी नाले में पानी नहीं रह सकता – लेकिन उसे यह भी मालूम था कि पहाड़ियों से निकलने वाले कई सोते ताज़ा गिरी बर्फ़ के नीचे से नाले की जमी हुई सतह के ऊपर बहते रहते हैं। वह जानता था कि सबसे

भीषण ठण्ड के दिनों में भी ये सोते नहीं जमते हैं और वह इनके ख़तरों से वाक़िफ़ था। ये ख़तरनाक फन्दे थे। इनकी वजह से पोली बर्फ़ के नीचे पानी के कुण्ड बन जाते थे जो तीन इंच से लेकर तीन फ़ीट तक गहरे हो सकते थे। कभी-कभी आधा इंच मोटी जमी बर्फ़ की पपड़ी उन्हें ढँके रहती थी जिसके ऊपर ताज़ा बर्फ़ होती थी। कभी-कभी एक के बाद एक पानी और बर्फ़ीली पपड़ी की कई परतें होती थीं, जिसके चलते जब कोई इसमें धँसता था तो कुछ देर तक धँसता चला जाता था, कभी-कभी तो वह कमर तक भीग जाता था।

इसीलिए वह इस क़दर घबराकर पीछे भागा था। उसे अपने पैर के नीचे धसक महसूस हुई थी और बर्फ़ीली पपड़ी के चटखने की आवाज़ सुनायी पड़ी थी। इस तापमान पर पैर गीले करने का मतलब था गहरी मुश्किल और ख़तरा। सबसे कम नुक़सान का मतलब था घण्टे-भर की देरी क्योंकि उसे रुककर आग जलानी पड़ती और उसकी गरमाहट में पैरों से जुराबें और जूते उतारकर सुखाने पड़ते। उसने रुककर नाले की सतह और उसकी कगारों का ग़ौर से मुआइना किया और फिर तय पाया कि पानी का बहाव बायीं ओर से आ रहा है। नाक और गालों को मलते हुए वह कुछ देर सोच में डूबा रहा, फिर फूँक-फूँककर क़दम रखते हुए घूमकर बायीं ओर चला गया। ख़तरे से बाहर हो जाने पर उसने नया तम्बाकू मुँह में डाला और चार मील फ़ी घण्टे की चाल से आगे चल दिया। अगले दो घण्टों के दौरान उसे ऐसे कई फन्दे मिले। आम तौर पर छुपे हुए जलकुण्डों के ऊपर की बर्फ़ ज़रा धँसी हुई और चमकदार होती थी जिससे ख़तरे का संकेत मिल जाता था। फिर भी, एक बार और वह बाल-बाल बचा; और एक बार, ख़तरा सूँघकर उसने कुत्ते को आगे जाने के लिए मजबूर किया। कुत्ता जाना नहीं चाहता था। वह पीछे ही रुका रहा लेकिन आदमी ने उसे ज़ोर से धक्का दिया तो वह जल्दी से सफ़ेद, सपाट सतह पर भागा। अचानक उसके पैर धँसे, वह एक ओर झुका हुआ लड़खड़ाया और फिर किनारे, सुरक्षित स्थान पर निकल गया। उसके अगले पंजे

और पैर भीग गये थे और फ़ौरन ही उन पर चिपका पानी जमकर सख़्त बर्फ़ में बदल गया। उसने जल्दी-जल्दी अपने पैरों से बर्फ़ चाटने की कोशिश की और फिर बर्फ़ पर गिरकर पंजों के बीच जमी बर्फ़ को मुँह से निकालने लगा। यह उसकी नैसर्गिक वृत्ति का मामला था। बर्फ़ को जमे रहने देने का मतलब था पंजों में तकलीफ़देह सूजन। वह

इस बात को नहीं जानता था। वह तो बस अपने भीतर कहीं गहरे से आ रहे रहस्यमय सन्देशों का पालन कर रहा था। लेकिन आदमी यह जानता था क्योंकि उसे इस मामले में दूसरों की राय मिल चुकी थी। उसने दस्ताना उतारा और बर्फ़ के कणों को उँगलियों से बाहर निकाल दिया। उसकी उँगलियाँ मुश्किल से एक मिनट तक खुली थीं पर वे जिस तेज़ी से सुन्न हुईं, उससे वह भौंचक रह गया। वाक़ई बेहद ठण्ड थी। उसने हड़बड़ाकर दस्ताना वापस चढ़ाया और वहशियों की तरह अपने हाथ को छाती पर ज़ोर-ज़ोर से मारने लगा।

बारह बजे दिन एकदम चमकदार था। लेकिन सूरज सर्दियों की अपनी यात्रा पर इतना दक्षिणायन था कि क्षितिज से ऊपर नहीं आ सकता था। पृथ्वी का उभार उसके और हेण्डरसन क्रीक के बीच आता था जहाँ वह आदमी मध्याह्न के समय स्वच्छ आकाश के नीचे चल रहा था, बिना परछाईं छोड़े। ठीक साढ़े बारह बजे वह उस जगह पहुँच गया जहाँ से नाला कई उपधाराओं में बँट गया था। अपनी रफ़्तार से वह खुश था। अगर वह ऐसे ही चलता रहा तो छह बजे तक उन लोगों के पास ज़रूर पहुँच जायेगा। उसने जैकेट और क़मीज़ के बटन खोले और अपना खाना बाहर निकाला। इस काम में बस चौथाई मिनट लगा होगा, पर इस ज़रा-से पल में ही उसकी खुली उँगलियाँ सुन्न होने लगी थीं। उसने दस्ताना वापस नहीं चढ़ाया बल्कि उँगलियों को दस-बारह बार ज़ोर से अपने पैर से टकराया। फिर वह खाने के लिए बर्फ़ से ढँके एक कुन्दे पर बैठ गया। उँगलियों को पैर पर मारने से उनमें आया ख़ून का प्रवाह इतनी जल्दी रुक गया कि वह चौंक पड़ा। उसे बिस्कुट का एक निवाला लेने का भी मौक़ा नहीं मिला था। उसने बार-बार उँगलियाँ पैर पर पटकीं और फिर उन पर दस्ताना चढ़ाकर खाने के लिए दूसरा हाथ बाहर निकाला। उसने बिस्कुट मुँह में डालने की कोशिश की लेकिन बर्फ़ का जाबा आड़े आ गया। वह आग जलाकर बदन पर जमी बर्फ़ पिघलाना भूल गया था। अपनी मूर्खता पर वह मन-ही-मन हँसा लेकिन हँसते हुए भी उसका ध्यान इस ओर गया कि उसकी खुली उँगलियाँ सुन्न हुई जा रही हैं। उसने यह भी ध्यान दिया कि बैठने पर उसके पंजों में ख़ून की जो तेज़ी महसूस हुई थी, वह ख़त्म हो रही है। उसे शक हुआ कि पंजे अभी गरम हैं या सुन्न पड़ गये। जूतों के भीतर उसने पंजों को हिलाने-डुलाने की कोशिश की और पाया कि वे सुन्न हो चुके हैं।

उसने जल्दी से दस्ताना चढ़ाया और उठ गया। वह थोड़ा डर गया था। ज़ोर से पैर पटकते हुए वह तब तक इधर-उधर चलता रहा जब तक कि उनमें ख़ून फिर से दौड़ने नहीं लगा। ठण्ड वाक़ई बहुत ज़्यादा है, बस यही ख़याल उसके दिमाग़ में बार-बार आ

रहा था। सल्फ़र क्रीक का वह आदमी ठीक ही बता रहा था कि खुले इलाक़ों में किस क़दर ठण्ड हो जाती है। उस समय वह उस पर हँस दिया था! यह बताता है कि आदमी को अपने आप पर कुछ ज़्यादा ही यक़ीन नहीं करना चाहिए। ठण्ड वाक़ई ज़बरदस्त थी, इसमें कोई शक नहीं था। वह पैर पटकते और हाथों को ज़ोर से घुमाते हुए चलता रहा जब तक कि बदन में गरमी लौटने से आश्वस्त नहीं हो गया। फिर उसने माचिस निकाली और आग जलाने का उपक्रम शुरू किया। पिछले बसन्त की बाढ़ ने झाड़ियों की जड़ों के पास सूखी टहनियों के ढेर जमा कर दिये थे। उसने पहले थोड़ी-सी छिपटियाँ जलायीं और कुछ ही देर में अच्छी-ख़ासी आग जलने लगी जिसकी गरमी में उसने चेहरे की बर्फ़ पिघलायी और अपने बिस्कुट खाये। कुछ समय के लिए उसने वातावरण की ठण्ड को पछाड़ दिया था। कुत्ता सन्तुष्ट भाव से आग के सामने पसरा था, इतना नज़दीक कि भरपूर गरमी पा सके और इतनी दूर कि झुलसने से बचा रहे।

खाना ख़त्म करके आदमी ने अपना पाइप भरा और आराम से तम्बाकू पीता रहा। फिर उसने दस्ताने चढ़ाये, कनटोप को कानों पर कसकर जमाया और नाले की बायीं उपधारा से होकर आगे चल पड़ा। कुत्ता हताश हो गया और मुड़-मुड़कर आग की ओर देख रहा था। इस आदमी को ठण्ड का अनुभव नहीं था। शायद उसके पूर्वजों की तमाम पीढ़ियाँ ठण्ड से, असली ठण्ड, हिमांक से एक सौ सात डिग्री नीचे की ठण्ड से अपरिचित रही थीं। लेकिन कुत्ता जानता था; उसकी तमाम पिछली पीढ़ियाँ जानती थीं और उसने यह ज्ञान विरासत में पाया था। वह जानता था कि ऐसी डरावनी ठण्ड में बाहर घूमना अच्छा नहीं है। यह समय था कि बर्फ़ में गड्ढा खोदकर गुड़ी-मुड़ी होकर पड़े-पड़े उस वक़्त का इन्तज़ार किया जाये जब बादलों का पर्दा खुले आसमान को ढँक लेगा जहाँ से यह ठण्ड आ रही थी। दूसरी ओर, कुत्ते और आदमी के बीच कोई घनिष्ठता नहीं थी। दुलार के नाम पर उसे सिर्फ़ कोड़े की फटकार मिलती थी और तीखी, डरावनी घुड़कियाँ जो कोड़ों की चेतावनी देती थीं। इसलिए कुत्ते ने अपनी

आशंकाएँ आदमी को जताने की कोई कोशिश नहीं की। उसे आदमी की भलाई की चिन्ता नहीं थी; वह तो अपने लिए आग के पास लौटना चाह रहा था। लेकिन आदमी ने सीटी बजायी और कोड़े की फटकार वाली आवाज़ में उसे बुलाया और कुत्ता मुड़कर उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

आदमी ने तम्बाकू मुँह में भरा और ऐम्बर की नयी दाढ़ी बनानी शुरू कर दी। उसकी नम साँस ने फ़ौरन उसकी मूँछों, भौंहों और बरौनियों को सफ़ेद पाउडर से ढँक दिया। लगता था हेण्डरसन की बायीं उपधारा पर ज़्यादा सोते नहीं थे, और आधे घण्टे तक आदमी को उनका कोई चिह्न नहीं दिखा। और फिर अचानक यह हो गया। एक ऐसी जगह पर, जहाँ कोई चिह्न नहीं थे और बर्फ़ की सपाट चिकनी सतह नीचे के ठोसपन का विज्ञापन कर रही थी, उसके पैर एकदम से धँस पड़े। वहाँ ज़्यादा गहरा नहीं था। वह गिरते-पड़ते ठोस सतह पर आया तो घुटनों से कुछ नीचे तक भीग चुका था।

नाराज़ होकर उसने अपनी क़िस्मत को ज़ोर की गाली दी। उसने छह बजे तक बाक़ी बन्दों के पास शिविर में पहुँच जाने की उम्मीद लगायी थी, पर अब उसे एक घण्टे की देर हो जायेगी क्योंकि उसे आग जलाकर जुराबें और जूते सुखाने पड़ेंगे। इतने कम तापमान पर ऐसा करना निहायत ज़रूरी था – यह वह अच्छी तरह जानता था। वह मुड़ा और कगार पर चढ़कर ऊपर निकल आया। थोड़ी ऊँचाई पर, फ़र के कई छोटे पेड़ों के तनों के पास की झाड़ियों में बाढ़ से आयी सूखी लकड़ियों का ढेर जमा था। इनमें ज़्यादातर तो पतली डण्डियाँ और टहनियाँ थीं लेकिन कई मोटी शाखाओं के टुकड़े और पिछले साल की सूखी घास के गुच्छे भी थे। उसने कई बड़े-बड़े टुकड़े बर्फ़ पर डाल दिये। यह बुनियाद का काम करेगा और आग से पिघली बर्फ़ में डूबकर लपट को बुझ जाने से बचायेगा। उसने अपनी जेब से भोजपत्र का एक छोटा-सा टुकड़ा निकालकर उसे माचिस से जलाया। वह काग़ज़ से भी ज़्यादा आसानी से जल गया। इसे बुनियाद पर रखकर वह नन्ही-सी लौ को सूखी घास के गुच्छों और छोटी-छोटी

टहनियों से लहकाने लगा।

उसे इस ख़तरे का अहसास था और वह धीरे-धीरे और सावधानी से काम कर रहा था। जैसे-जैसे आग ज़ोर पकड़ती गयी, वह उसमें ज़्यादा बड़ी टहनियाँ डालता गया। वह बर्फ़ में उकड़ूँ बैठा था और झाड़ियों में उलझी टहनियों को खींच-खींचकर सीधे आग में डाल रहा था। उसे मालूम था कि असफलता क़तई नहीं होनी चाहिए। जब ठण्ड शून्य से पचहत्तर डिग्री नीचे हो तो आदमी को आग जलाने के पहले प्रयास में ही असफल नहीं होना चाहिए – वह भी तब, जब उसके पैर भीग गये हों। अगर उसके पैर सूखे हैं, और वह असफल रहता है तो वह आधा मील दौड़कर रक्त का संचार फिर से शुरू कर सकता है। लेकिन पचहत्तर डिग्री नीचे पर भीगे और जम रहे पैरों में दौड़ने से रक्त संचार वापस नहीं लाया जा सकता। चाहे वह जितनी भी तेज़ी से दौड़े, भीगे पैर जमकर अकड़ जायेंगे।

वह आदमी यह सब जानता था। पिछले पतझड़ में सल्फ़र क्रीक में उस अनुभवी आदमी ने इसके बारे में बताया था और अब उसे उसकी सलाह का महत्त्व समझ आ रहा था। उसके पैर अभी से संवेदनशून्य हो चुके थे। आग जलाने के लिए उसे अपने दस्ताने उतारने पड़े थे और उँगलियाँ तुरन्त ही सुन्न हो गयी थीं। चार मील प्रति घण्टे की उसकी चाल के कारण उसके दिल की धड़कन ख़ून को उसके बदन के हर हिस्से तक भेजती रही थी। लेकिन जैसे ही वह रुका, वह पम्प भी ढीला पड़ गया। आसमान से उतरती ठण्ड पृथ्वी के अरक्षित सिरे पर वज्रपात कर रही थी और उस अरक्षित सिरे पर मौजूद होने के नाते वह उस प्रहार का पूरा वेग झेल रहा था। उसके शरीर का रक्त इससे सहमकर पीछे हट रहा था। कुत्ते की तरह रक्त भी सजीव था, और कुत्ते की तरह वह भी कहीं छुपकर इस भयंकर ठण्ड से बचना चाहता था। जब तक वह चार मील प्रति घण्टे की रफ़्तार से चल रहा था तो वह रक्त को धकियाकर शरीर की सतहों तक भेजता रहा था; लेकिन अब वह तेज़ी से उतार पर था और शरीर की खोहों में जा छिपा

था। देह के छोरों को सबसे पहले उसकी अनुपस्थिति महसूस हुई थी। उसके भीगे पैर ज़्यादा तेज़ी से जम रहे थे और उसकी खुली उँगलियाँ ज़्यादा तेज़ी से सुन्न हुई थीं, हालाँकि अभी वे जमने नहीं लगी थीं। नाक और गाल अकड़ने लगे थे, जबकि रक्त से वंचित होते ही उसके पूरे बदन की त्वचा सर्द हो गयी थी।

लेकिन वह सुरक्षित था। पंजों और नाक और गालों पर जमने का थोड़ा ही असर होगा क्योंकि अब आग अच्छी तरह जलने लगी थी। अभी वह अपनी उँगली की मोटाई की टहनियाँ इसमें डाल रहा था। एक-दो मिनट में वह कलाई जितनी मोटी शाखाएँ डालने लगेगा, और तब वह भीगे हुए जूते-मोज़े उतार सकेगा। फिर जब तक वे सूखेंगे, वह अपने नंगे पैरों को बर्फ़ से रगड़ने के बाद आग से गरमायेगा। सल्फ़र क्रीक के सयाने की सलाह याद करके वह मुस्कुरा दिया। उसने बड़ी गम्भीरता से यह नियम बताया था कि पचास डिग्री नीचे के बाद किसी को भी क्लोण्डाइक में अकेले सफ़र नहीं करना चाहिए। पर वह तो अकेले था, उसके साथ दुर्घटना भी हुई थी और उसने खुद को बचा लिया था। उसने सोचा कि इन पुराने लोगों में से कई बिल्कुल औरतों की

तरह हैं। आदमी बस अपना दिमाग़ शान्त रखे तो कोई परेशानी नहीं होगी। कोई भी आदमी अगर असल मर्द है, तो अकेले सफ़र कर सकता है। लेकिन जिस तेज़ी से उसकी नाक और गाल जमे जा रहे थे, वह बड़ी हैरानी की बात थी। और उसने यह नहीं सोचा था कि उसकी उँगलियाँ इतने कम समय में बेजान हो जायेंगी। वे बेजान हो चुकी थीं, क्योंकि वह मुश्किल से उनसे कोई टहनी पकड़ पा रहा था। और वे उसके बदन से और उससे बहुत दूर मालूम पड़ रही थीं। जब वह कोई टहनी छूता था तो उसे मुड़कर देखना पड़ता था कि उसे पकड़ सका है या नहीं। उसकी उँगलियों के पोरों और उसके बीच के तार पक्के तौर पर टूट गये थे।

इस सबका अब ज़्यादा मतलब नहीं था। सामने चटखती और लहकती आग जल रही थी और हर उछलती हुई लपट जीवन का आश्वासन दे रही थी। उसने जूतों के तस्मे खोलना शुरू किया। जूतों पर बर्फ़ की कड़ी परत थी; मोटे जर्मन मोज़े घुटनों के ठीक नीचे तक लोहे के खोल जैसे हो गये थे; और तस्मे ऐसे हो गये थे मानो स्टील की छड़ें तेज़ आँच से पिघलकर ऐंठी और एक-दूसरे से उलझ गयी हों। एक-दो बार उसने सुन्न पड़ी उँगलियों से खींचने की कोशिश की, फिर अपनी बेवक़ूफ़ी का अहसास कर उसने म्यान से चाकू निकाला।

वह तस्मों को काट पाता, इसके पहले ही अघट घट गया। यह उसी की ग़लती थी। उसे फ़र के पेड़ के नीचे आग नहीं जलानी चाहिए थी। उसे यह काम खुले में करना चाहिए था। लेकिन झंखाड़ में से टहनियों को खींचकर सीधे आग में डालना ज़्यादा आसान था। पर वह जिस पेड़ के नीचे यह कर रहा था, उसकी डालों पर बर्फ़ का ख़ासा ढेर लगा था। कई हफ़्तों से हवा नहीं चली थी और हर डाल अच्छी तरह लदी हुई थी। हर टहनी खींचकर निकालने के साथ उसने पेड़ को हल्का-सा झकझोरा था। यह कम्पन इतना हल्का था कि उसे नज़र नहीं आता था, लेकिन आफ़त बरपा करने के लिए काफ़ी था। पेड़ की ऊपर की एक डाली ने बर्फ़ का अपना बोझ पलट दिया। यह

नीचे की डालों पर गिरा और वे भी ख़ाली हो गयीं। यह प्रक्रिया जारी रही, फैलती गयी और पूरे पेड़ को चपेट में ले लिया। यह हिमस्खलन की तरह बढ़ी और बिना किसी चेतावनी के उस आदमी और आग पर आ गिरी, और आग बुझ गयी! जहाँ लपटें लपक रही थीं, वहाँ अब ताज़ा और ऊबड़-खाबड़ बर्फ़ का ढकना था।

आदमी सन्न रह गया। यह तो ऐसा था मानो उसे मौत का फरमान सुना दिया गया हो। एक पल के लिए वह चुपचाप बैठा उस जगह को घूरता रहा जहाँ आग थी। फिर उसका मन एकदम शान्त हो गया। शायद सल्फ़र क्रीक का सयाना सही था। अगर उसके साथ सफ़र का कोई साथी होता तो उसे कोई ख़तरा नहीं होता। साथी ने आग जला ली होती। पर अब तो उसे ही फिर से आग जलानी थी, और इस बार कोई चूक नहीं होनी चाहिए थी। अगर वह सफल रहा तो भी शायद उसे पैर की कुछ उँगलियाँ गँवानी पड़ेंगी। उसके पाँव अब तक बुरी तरह जम चुके होंगे, और दुबारा आग जलने में अभी कुछ समय लगेगा।

यह सब सोचते हुए वह बैठा नहीं था। वह लगातार व्यस्त था। उसने आग के लिए नयी बुनियाद तैयार की, इस बार खुले में, जहाँ कोई दगाबाज़ पेड़ उसे दफ़न न कर सके। फिर उसने सूखी घास और पतली-पतली टहनियाँ बटोरीं। वह इन्हें खींचने के लिए अपनी उँगलियों का इस्तेमाल नहीं कर पा रहा था, बल्कि हथेलियों में भरकर उठा रहा था। इस तरह से बहुत-सी सड़ी टहनियाँ और हरी काई के गुच्छे भी आ-जा रहे थे, पर वह कुछ नहीं कर सकता था। वह बड़े व्यवस्थित ढंग से काम कर रहा था और दोनों बाँहों में भरकर मोटी शाखाएँ भी ले आया था, जिन्हें बाद में आग के ज़ोर पकड़ने पर काम आना था। पूरे समय कुत्ता बैठा उसे देख रहा था; उसकी आँखों में उत्कण्ठाभरी ललक थी क्योंकि वह उसे अग्निदाता के रूप में देखता था और आग के आने में देर हो रही थी।

जब सब तैयार हो गया तो आदमी ने भोजपत्र के दूसरे टुकड़े के लिए जेब में हाथ

डाला। वह जानता था कि छिलका वहाँ है, पर हालाँकि वह उँगलियों से उसे महसूस नहीं कर पा रहा था पर जेब में टटोलते हुए उसे उसकी करकराहट सुनायी दे रही थी। भरसक कोशिश करके भी वह उसे उँगलियों में पकड़ नहीं पा रहा था। और इस पूरे समय उसकी चेतना में यह बात मौजूद थी कि हर पल उसके पैर जमे जा रहे हैं। इस विचार से उसके दिल में दहशत की लहर उठी, लेकिन उसने उसे दबा दिया और शान्त चित्त बना रहा। उसने दाँतों से खींचकर दस्ताने चढ़ा लिये और ज़ोर-ज़ोर से बाँहों को घुमाते हुए दोनों हाथ पूरी ताक़त से अपनी जाँघों पर मारने लगा। पहले वह बैठकर ऐसा करता रहा, फिर उठकर खड़ा हो गया। पूरे समय कुत्ता बर्फ़ में बैठा आदमी को देखता रहा; उसकी भेड़ियों वाली झबरीली पूँछ गरमाहट देती हुई अगले पंजों को ढँके हुए थी, और उसके तीक्ष्ण भेड़ियों वाले कान उत्सुकता से आगे की ओर तने हुए थे। अपने हाथों को भाँजते और पीटते हुए उस आदमी का दिल उस जानवर को देखकर ईर्ष्या से भर उठता था जो अपने प्राकृतिक आवरण में गरम और सुरक्षित था।

कुछ देर बाद उसे अपनी उँगलियों में संवेदन के पहले, दूर से आते संकेतों का भान हुआ। हल्की-सी झनझनाहट धीरे-धीरे बढ़ते हुए तेज़ दर्द में बदल गयी, जो लगभग

असहनीय था, लेकिन आदमी ने खुशी से इसका स्वागत किया। उसने दाहिने हाथ का दस्ताना खींचकर निकाला और भोजपत्र का टुकड़ा बाहर लाया। नंगी उँगलियाँ फिर तेज़ी से सुन्न हो रही थीं। उसने जेब से गन्धक वाली माचिस का डिब्बा निकाला। लेकिन भीषण ठण्ड तब तक उसकी उँगलियों को बेजान कर चुकी थी। एक तीली अलग करने की कोशिश में पूरा बण्डल बर्फ़ में गिर गया। उसने इसे बर्फ़ में से निकालने की कोशिश की लेकिन नाकाम रहा। बेजान उँगलियाँ न तो छू सकती थीं, न पकड़ सकती थीं। वह बेहद सावधान था। उसने अपने जम रहे पैरों और नाक और गालों को दिमाग़ से बाहर निकाल दिया; उसका तन-मन पूरी तरह माचिस पर केन्द्रित हो गया था। स्पर्शेन्द्रिय की जगह दृष्टि का इस्तेमाल करते हुए वह ध्यान से देखता रहा, और जब उसने बण्डल के दोनों तरफ़ अपनी उँगलियाँ देखीं तो उन्हें बन्द कर दिया – यानी उसने उन्हें बन्द करने की इच्छा की, पर सम्पर्क-सूत्र काम नहीं कर रहे थे और उँगलियों ने इच्छा का पालन नहीं किया। उसने दाहिने हाथ पर दस्ताना फिर चढ़ा लिया और बड़ी ज़ोर से उसे कई बार घुटने पर पटका। फिर उसने दस्ताने वाले हाथों से ढेर सारी बर्फ़ के साथ माचिस का बण्डल उठाकर गोद में डाल लिया। इससे भी उसे ज़्यादा फ़ायदा नहीं हुआ।

काफ़ी कोशिश के बाद वह दस्ताना चढ़े अपने हाथों की गदेलियों के बीच बण्डल को थाम पाया। ऐसे ही उठाये हुए वह इसे मुँह तक लाया। पूरा ज़ोर लगाकर उसने मुँह खोला तो जमी हुई बर्फ़ कड़कड़ाकर चटख गयी। उसने निचला जबड़ा अन्दर किया, ऊपर वाला होंठ ऊपर चढ़ाकर रास्ते से हटाया और अपने ऊपर के दाँतों से बण्डल को रगड़कर एक तीली अलग करने की कोशिश करने लगा। एक तीली निकालने में वह कामयाब रहा जो उसने अपनी गोद में गिरा ली। अब भी उसकी हालत बेहतर नहीं थी। वह इसे उठा नहीं सकता था। फिर उसे एक रास्ता सूझा। उसने तीली को अपने दाँतों से उठाया और अपनी पतलून पर रगड़ने लगा। क़रीब बीस बार रगड़ने के बाद वह जल

उठी। जलती तीली को दाँतों से ही पकड़े हुए उसने भोजपत्र से लगाया लेकिन जलते गन्धक का धुँआ उसके नथुनों से होता हुआ फेफड़ों में पहुँचा और वह बुरी तरह खाँसने लगा। तीली बर्फ़ में गिरकर बुझ गयी।

इसके बाद नियन्त्रित हताशा के एक क्षण में उसके दिमाग़ में फिर यह विचार आया कि सल्फ़र क्रीक के सयाने की बात सच थी : पचास डिग्री नीचे पर हर आदमी को किसी संगी के साथ ही निकलना चाहिए। उसने ज़ोर-ज़ोर से अपने हाथ पीटे लेकिन कोई सनसनी नहीं हुई। अचानक उसने दाँतों से खींचकर अपने दस्ताने हटाये और दोनों हाथ नंगे कर दिये। उसने हाथों की गदेलियों के बीच पूरा बण्डल पकड़ लिया। उसकी बाँहों की मांसपेशियाँ अभी इतनी नहीं जमी थीं कि वह हथेलियों के बीच बण्डल को कसकर दबा न सके। फिर उसने पूरे बण्डल को जाँघ पर रगड़ा। वह भक्क से जल उठा, एक साथ सत्तर तीलियाँ! हवा एकदम नहीं थी इसलिए बुझने का ख़तरा नहीं था। उसने दमघोंटू धुएँ से बचने के लिए सिर एक किनारे रखा और जलते हुए बण्डल को भोजपत्र के क़रीब लाया। ऐसा करते हुए उसे अपने हाथों में कुछ संवेदन महसूस हुआ। उसका मांस जल रहा था। वह उसे सूँघ सकता था। सतह के नीचे वह उसे महसूस कर रहा था। हल्का-सा संवेदन दर्द में बदल गया जो बढ़ता जा रहा था। फिर भी वह इसे बर्दाश्त करता रहा और तीलियों की लौ को किसी तरह छिलके से लगाने की कोशिश करता रहा। पर वह जल नहीं रहा था क्योंकि उसके जलते हाथ लपट के आड़े आ रहे थे।

आख़िरकार, जब उसके लिए बर्दाश्त करना नामुमकिन हो गया तो उसने झटके से हाथ अलग कर लिये। जलती तीलियाँ छन्न करके बर्फ़ में गिर गयीं लेकिन भोजपत्र ने लौ पकड़ ली थी। वह लौ पर सूखी घास और सबसे महीन पतली टहनियाँ डालने लगा। वह चुन नहीं पा रहा था क्योंकि उसे इस ईंधन को अपनी हथेलियों के निचले हिस्से से पकड़कर उठाना पड़ रहा था। सड़ी लकड़ी और हरी काई के छोटे-छोटे टुकड़े टहनियों

से चिपके हुए थे और वह अपने भरसक उन्हें दाँतों से अलग कर दे रहा था। बड़ी सावधानी से लेकिन भौंड़े ढंग से वह लौ को धीरे-धीरे बढ़ा रहा था। आग का अर्थ था जीवन, इसे मरने नहीं देना था। उसके बदन की सतह से ख़ून पीछे हटने के कारण अब वह काँपने लगा और उसके हाथों की हरकतें और भी बेढब हो गयीं। हरी काई का एक बड़ा-सा टुकड़ा सीधा छोटी-सी आग पर गिर पड़ा। उसने उँगलियों से कोंचकर उसे बाहर करने की कोशिश की लेकिन कँपकँपी की वजह से उसका हाथ ज़ोर से चल गया और जलती घास और छोटी टहनियाँ छितरा गयीं। उसने उँगलियों से धकियाकर उन्हें फिर इकट्ठा करने की कोशिश की, लेकिन उसकी पूरी कोशिश के बावजूद वह अपनी कँपकँपी पर क़ाबू नहीं रख पा रहा था और टहनियाँ पहले से भी ज़्यादा बुरी तरह छितरा गयीं। एक-एक टहनी धुआँ छोड़कर बुझ गयी। अग्निदाता असफल रहा था। निरीह भाव से अपने इर्दगिर्द देखते हुए उसकी निगाह कुत्ते पर पड़ी जो आग के ध्वंसावशेषों के उस पार उसके सामने बर्फ़ पर बैठा था। वह व्यग्र हो रहा था। कभी एक पंजा उठाता तो कभी दूसरा और उत्कण्ठापूर्वक उसकी ओर देख रहा था।

कुत्ते को देखते ही एक उन्मत्त विचार उसके मस्तिष्क में कौंध गया। उसे वह कहानी याद आयी जब बर्फ़ीले तूफ़ान में फँसा एक व्यक्ति एक बैल को मारकर उसके शव में घुस गया था और उसकी गरमी से उसकी जान बच गयी थी। वह भी कुत्ते को मारकर अपने हाथ उसके गरम शरीर में तब तक धँसाये रखेगा जब तक कि उनमें जान न आ जाये। फिर वह दुबारा आग जला सकेगा। उसने कुत्ते को आवाज़ देकर पास बुलाया, लेकिन उसकी आवाज़ में एक अजीब-सा डर था जिसने जानवर को डरा दिया क्योंकि उसने इस आदमी को इस ढंग से बोलते हुए पहले कभी नहीं सुना था। कुछ बात तो थी, और उसकी सन्देहशील प्रकृति ने ख़तरा सूँघ लिया था – वह नहीं जानता था कि ख़तरा क्या है लेकिन कहीं, किसी तरह, उसके दिमाग़ में आदमी को लेकर एक सन्देह कुलबुलाने लगा था। आदमी की आवाज़ सुनकर उसने अपने कान ऊँचे कर

लिये और उसकी बेचैनीभरी हरकतें बढ़ गयीं लेकिन वह पास नहीं आया। आदमी घुटनों के बल रेंगता हुआ कुत्ते की ओर बढ़ा। इस असामान्य मुद्रा से जानवर का सन्देह और बढ़ा और वह उससे बचकर किनारे खिसक गया।

आदमी एक पल के लिए बर्फ़ में बैठ गया और मन शान्त करने की कोशिश करने लगा। फिर उसने दाँतों की मदद से दस्ताने चढ़ा लिये और खड़ा हो गया। उसने खुद को यह विश्वास दिलाने के लिए नीचे देखा कि वह वाक़ई खड़ा है क्योंकि पैर एकदम सुन्न हो जाने की वजह से वह धरती से कट-सा गया था। सीधे खड़े होने की उसकी मुद्रा ने ही कुत्ते के दिमाग़ से सन्देह के जाले को साफ़ करना शुरू कर दिया; और जब उसने अपनी आवाज़ में कोड़ों की फटकार के साथ दृढ़ता से आदेश दिया तो कुत्ते की आदत उसे उसके पास खींच लायी। जैसे ही वह उसकी पहुँच के भीतर आया, आदमी बेक़ाबू हो गया। उसकी बाँहें कुत्ते की ओर लपकीं और वह यह पाकर हतप्रभ रह गया कि उसके हाथ कुछ पकड़ नहीं सकते थे और उँगलियाँ न मुड़ सकती थीं और न कुछ महसूस कर सकती थीं। एक पल के लिए वह भूल ही गया था कि वे जम चुकी हैं और लगातार जमती जा रही हैं। यह सब बहुत जल्दी हुआ और इससे पहले कि जानवर निकल पाता, उसने उसके शरीर को बाँहों में भर लिया था। वह गुर्राते, मिमियाते और छूटने के लिए कसमसाते हुए कुत्ते को पकड़े हुए बर्फ़ में बैठा रहा।

वह बस यही कर सकता था। उसे बाँहों में जकड़े हुए बैठा रह सकता था। उसे अहसास हुआ कि वह कुत्ते को मार नहीं सकता। ऐसा करना क़तई सम्भव नहीं था। अपने असहाय हाथों से वह न तो अपना चाकू सँभाल सकता था और न ही कुत्ते का गला घोंट सकता था। आदमी ने उसे छोड़ दिया और वह दुम दबाये और बुरी तरह गुर्राते हुए पागलों की तरह वहाँ से भागा। चालीस फ़ीट दूर जाकर वह रुका और विस्मयभरी दृष्टि से उसे देखने लगा; उसके कान एकदम खड़े हो गये थे। आदमी ने अपने हाथों को ढूँढ़ने के लिए नीचे देखा और पाया कि वे उसकी बाँहों के सिरे पर झूल रहे हैं। उसे

अचानक ख़याल आया कि यह तो बड़ा अजीब है कि आदमी को अपने हाथों का पता करने के लिए आँखों का इस्तेमाल करना पड़े। वह अपने हाथ आगे-पीछे भाँजने लगा और उन्हें ज़ोर-ज़ोर से जाँघों पर पटकने लगा। पूरी ताक़त से पाँच मिनट तक ऐसा करने के बाद उसके दिल के पम्प ने इतना ख़ून बदन की सतह पर भेजा कि उसकी कँपकँपी रुक गयी। लेकिन हाथों में कोई सनसनी पैदा नहीं हुई। उसे लग रहा था कि वे उसकी बाँहों के सिरे पर वज़न की तरह लटके हैं लेकिन उसे वज़न का कोई अहसास नहीं हो रहा है।

पहली बार उसे मौत का डर महसूस हुआ। यह डर बहुत तेज़ी से उस पर हावी हो गया क्योंकि अब उसे समझ आ रहा था कि यह महज़ हाथ-पैर की उँगलियों के जमने या हाथ-पैर गँवा देने का मामला नहीं था बल्कि ज़िन्दगी और मौत का सवाल था जिसमें हालात उसके ख़िलाफ़ थे। वह बुरी तरह घबरा गया और मुड़कर नाले की सतह पर आगे दौड़ने लगा। कुत्ता भी उसके पीछे-पीछे दौड़ लिया। वह अन्धाधुँध भाग रहा था और इस क़दर डरा हुआ था जैसा डर उसने जीवन में पहले कभी नहीं महसूस किया था। धीरे-धीरे बर्फ़ में क़दम धँसाते और गिरते-पड़ते आगे बढ़ते हुए उसे फिर से आसपास की चीज़ें दिखायी देने लगीं – नाले के कगार, पुरानी लकड़ियों के ढेर, ऐस्पन की सूखी झाड़ियाँ और आसमान। दौड़ने से वह बेहतर महसूस कर रहा था। अब वह काँप नहीं रहा था। हो सकता है, अगर वह दौड़ता रहा तो उसके पैरों में जमा ख़ून फिर रवाँ हो जाये; और वैसे भी अगर वह लगातार दौड़ता रहा तो शिविर में साथियों के पास पहुँच जायेगा। निस्सन्देह उसे हाथ-पैर की कुछ उँगलियों और चेहरे का कुछ हिस्सा गँवाना पड़ेगा, लेकिन उसके साथी उसकी जान बचा लेंगे। इसके साथ ही उसके दिमाग़ में एक और भी विचार था जो कहता था कि वह कभी शिविर और अपने साथियों तक नहीं पहुँचेगा; कि वे अभी मीलों दूर हैं, कि उसके अंग तेज़ी से जम रहे हैं, और कि जल्दी ही वह अकड़कर मर जायेगा। इस विचार को उसने पृष्ठभूमि में धकेल दिया और

उस पर सोचने से इनकार कर दिया। बीच-बीच में वह आगे आकर माँग करता कि उस पर ध्यान दिया जाये लेकिन वह फिर उसे पीछे धकेलकर दूसरी चीज़ों के बारे में सोचने की कोशिश करने लगता।

उसे यह बात अजीब लग रही थी कि जो पैर इस क़दर जम चुके हैं कि जब वे धरती से टकराते हैं और उसके बदन का बोझ उठाते हैं तो वह उन्हें महसूस नहीं कर पाता, उन्हीं पैरों से वह दौड़ पा रहा है। उसे ऐसा मालूम हो रहा था मानो वह सतह पर फिसलता जा रहा हो और धरती से उसका कोई सम्बन्ध न हो। एक बार उसने कहीं पंखयुक्त मरकरी की तस्वीर देखी थी। वह सोच रहा था कि क्या धरती के ऊपर फिरते हुए मरकरी को भी ऐसा ही महसूस होता था।

शिविर और साथियों के पास पहुँचने तक दौड़ते रहने की उसकी सोच में एक कमी थी : उसके शरीर में इतनी क्षमता नहीं रह गयी थी। कई बार वह लड़खड़ा चुका था और आख़िरकार वह बुरी तरह डगमगाया और भहराकर गिर पड़ा। उसने उठने की कोशिश की पर नाकाम रहा। उसने तय किया कि उसे बैठकर कुछ देर सुस्ताना चाहिए और अब वह बस धीरे-धीरे चलेगा। बैठकर अपनी साँस थिराते हुए उसका ध्यान गया कि अब वह काफ़ी गरम और सुखद महसूस कर रहा था। वह काँप नहीं रहा था, और यहाँ तक कि उसके सीने और टाँगों में गरमी आ गयी थी। लेकिन फ़िर भी जब उसने अपनी नाक और गालों को छुआ तो कुछ महसूस नहीं हुआ। दौड़ने से उनमें जान नहीं आयेगी। न ही उसके हाथों और पैरों में इससे जान आयेगी। फिर उसके मन में ख़याल आया कि उसके शरीर के जमे हुए हिस्सों का विस्तार हो रहा होगा। उसने इस विचार को दबाने की, इसे भूल जाने की, कुछ और सोचने की कोशिश की। उसे इसकी वजह से पैदा हो रही घबराहट का अहसास था और उसे इस घबराहट से डर लग रहा था। लेकिन यह विचार बार-बार उभरता रहा और फिर उसे अपना बदन पूरी तरह जमा हुआ दिखायी देने लगा। इसे बर्दाश्त करना मुश्किल था और वह एक बार फिर पागलों की

तरह दौड़ पड़ा। एक बार उसने अपनी रफ़्तार कम की और सामान्य ढंग से चलने लगा लेकिन शरीर के बाक़ी हिस्से के जमने की बात सोचकर ही वह एक बार फिर दौड़ पड़ा।

पूरे समय कुत्ता उसके साथ, ठीक उसके पीछे दौड़ता रहा। जब वह दोबारा गिर पड़ा, तो कुत्ता अपनी पूँछ से आगे के पंजों को ढँककर उसके सामने बैठ गया, वह उत्सुक और उद्विग्न था। कुत्ते को गरम और सुरक्षित देखकर आदमी का गुस्सा भड़क उठा और वह उसे तब तक गालियाँ बकता रहा जब तक उसने मालिक को खुश करने के अन्दाज़ में कान नीचे नहीं झुका लिये। इस बार कँपकँपी ने आदमी के शरीर को ज़्यादा जल्दी चपेट में लिया। वह ठण्ड से जमने के ख़िलाफ़ लड़ाई हार रहा था। यह चारों ओर से उसके बदन में घुसकर रेंग रही थी। यह सोचकर ही वह फिर भागा लेकिन सौ फ़ीट भी नहीं गया था कि लड़खड़ाया और मुँह के बल गिर पड़ा। यह उसकी आख़िरी दहशत थी। जब उसने साँस पर क़ाबू पाया और दिमाग़ स्थिर हुआ तो वह उठ बैठा। उसके मन में विचार आया कि उसे गरिमा के साथ मौत का सामना करना चाहिए। यह विचार उसे इसी प्रकार नहीं सूझा। उसने सोचा कि सिर-कटे हुए मुर्ग़े की तरह इधर-उधर भागकर वह सरासर बेवक़ूफ़ी करता रहा है – ऐसी ही उपमा उसकी आँखों के सामने आयी। उसे हर हाल में जमकर मरना ही था, तो क्यों न वह सम्मान से मौत को गले लगाये। इस तरह मन की शान्ति पाते ही उसे पहली बार तन्द्रा-सी महसूस हुई। उसने सोचा कि सोते हुए मरने का ख़याल बुरा नहीं है। यह बेहोशी की दवा लेने जैसा होगा। ठण्ड से जमना उतना बुरा नहीं है जितना लोग सोचते हैं। मरने के तमाम और भी बुरे तरीक़े हैं।

उसने देखा कि अगले दिन उसके साथियों को उसकी लाश मिली है। अचानक उसने खुद को उनके साथ पाया। वह सबके साथ पगडण्डी के साथ-साथ चलते हुए खुद को ढूँढ़ रहा था। वे एक मोड़ पर मुड़े और उसने खुद को बर्फ़ में पड़े हुए देखा।

अब वह अपने से आज़ाद हो गया था, वह बाक़ियों के साथ खड़ा खुद को बर्फ़ में पड़ा हुआ देख रहा था। ठण्ड वाक़ई बहुत ज़्यादा है, वह सोच रहा था। अमेरिका वापस लौटने पर वह लोगों को बतायेगा कि असल ठण्ड क्या होती है। फिर उसे सल्फ़र क्रीक का वह अनुभवी आदमी दिखायी दिया। वह उसे साफ़ देख रहा था, वह आराम से बैठा पाइप पी रहा था।

"तुम ठीक कहते थे, उस्ताद; ठीक कहते थे तुम," आदमी ने सल्फ़र क्रीक के सयाने से बुदबुदाकर कहा।

फिर वह आदमी तन्द्रा में डूब गया। उसे लग रहा था कि यह उसके जीवन की सबसे आरामदेह और तसल्लीबख्श नींद है। कुत्ता उसके सामने बैठा इन्तज़ार कर रहा था। छोटा-सा दिन एक लम्बी, धीमी साँझ में ढलने लगा था। आग जलाये जाने का कोई संकेत नहीं था, और इसके अलावा कुत्ते ने अपने पूरे अनुभव के दौरान किसी आदमी को बर्फ़ में इस तरह बैठे और आग जलाने की कोई कोशिश नहीं करते हुए नहीं देखा था। जब साँझ घिरने लगी, तो आग की ललक उस पर हावी हो गयी और बेचैनी से अपने अगले पंजे उठाते-रखते हुए उसने धीरे से कूँ-कूँ की, फिर आदमी की डाँट का अनुमान लगाकर कान सिर से चिपका लिये। लेकिन आदमी ख़ामोश रहा। फिर कुत्ता ऊँची आवाज़ में किंकियाया। इसके बाद वह खिसककर आदमी के क़रीब आया और मौत की गन्ध से चौंककर पीछे हट गया। कुछ देर वह आसमान में चमकते तारों की छाँह में रुका और मुँह उठाकर रोता रहा। फिर वह मुड़ा और उस शिविर की दिशा में चल पड़ा जिसे वह जानता था, जहाँ दूसरे भोजनदाता और अग्निदाता मौजूद थे।

अनुराग ट्रस्ट